दैनिक कवच संग्रह

प्रकाशक :

सिद्ध भारत योग विद्या केन्द्र

दैनिक कवच संग्रह

(हिन्दी अनुवाद सहित)

सम्पादक

सुनीत भार्गव

—: प्रकाशक :—

सिद्ध भारत योग विद्या केन्द्र

७/१, सिविल लाइन्स,
झाँसी (उ० प्र०)

गोपाल निकेतन
ग्राम व पोस्ट कलियासौड़
जिला पौड़ी गढ़वाल (उ० प्र०)

प्रकाशक :

सिद्ध भारत योग विद्या केन्द्र

६७/१, सिविल लाइन्स झांसी (उ० प्र०)

पुस्तक निम्नलिखित स्थान से प्राप्त की जा सकती है।

सुनीत भार्गव (गिरनारि)

गोपाल निकेतन

ग्राम व पोस्ट कलियासौड़

जिला पौड़ी गढ़वाल (उ० प्र०)

मुद्रक :

बाली आर्ट प्रेस

१ई/२१-बी, एन० आई० टी० फरीदाबाद
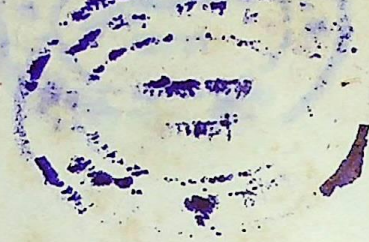
मूल्य : रु० १५००

परम पूजनीय स्वामी गोपाल दास जी गिरनारि
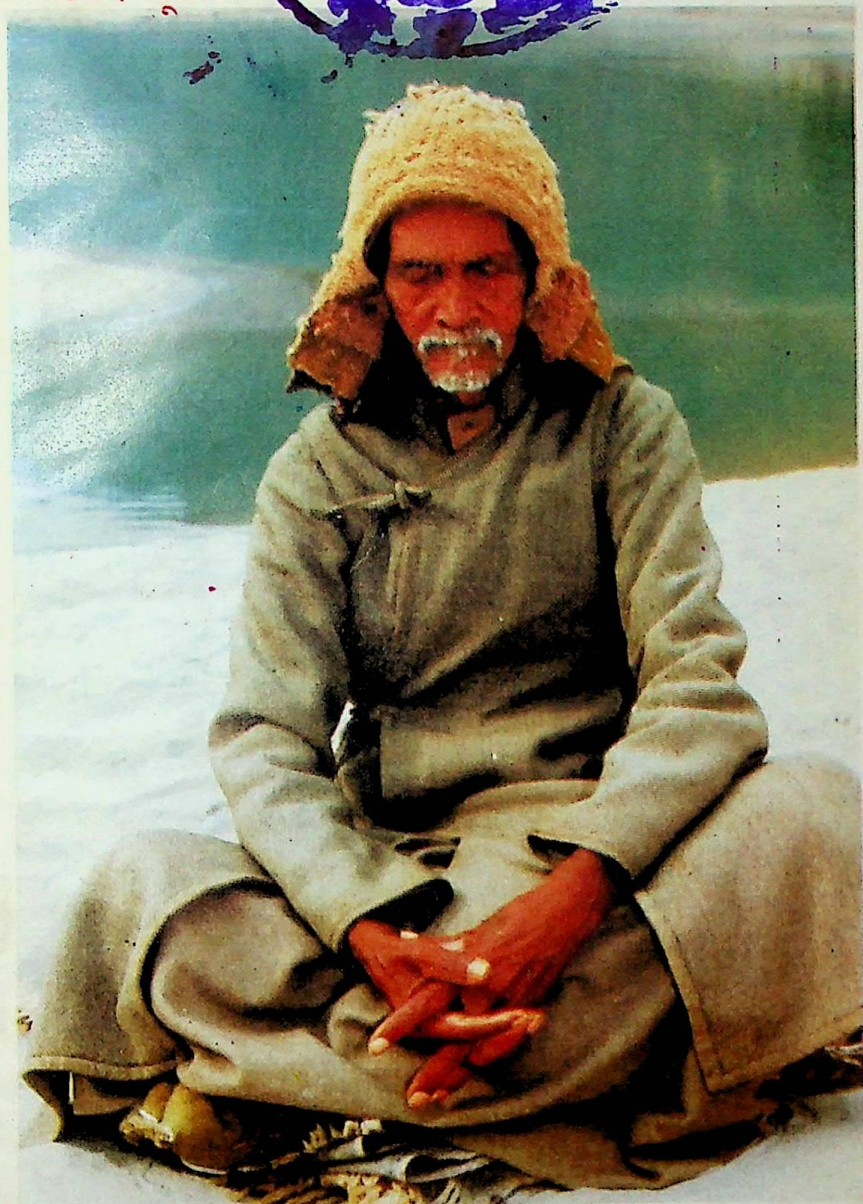
गुरूर्ब्रह्मा। गुरूर्विष्णु गुरूर्देवो महेश्वरः

गुरुः सावात परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः

पुस्तक की उपयोगिता व नित्य कर्मकाण्ड की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए द्वितीय संस्करण में नवग्रह कवच, मंगल स्तोत्र, भी पुस्तक में सम्मिलित किये गये हैं।

नवग्रह कवच व मङ्गल स्तोत्र प्रातः काल उठने के बाद पाठ करना चाहिए। किसी भी शुभ कार्य आरम्भ करने से पहले मङ्गल स्तोत्र का पाठ व ग्रह बाधा निवारण हेतू नवग्रह कवच का पाठ करना चाहिए।

सन्देश

भारतवर्ष की प्राचीन विद्याएं हिमालय में तपस्या लीन साधु, सन्तों व योगियों के पास आज भी विद्यमान है। प्रस्तुत पुस्तक में दिए हुए कवच व उनकी साधना भी देवलोक द्वारा कार्य करने का एक सरल व सिद्ध उपाय है।

मनुष्य जन्म कई योनियों में पाप भोगने के पश्चात व संचित पुण्य के अनुसार प्राप्त होता है, उस पर भी भारतवर्ष में जन्म पुण्यशाली जीवों को ही मिलता है। पूज्य स्वामी जी श्री गोपाल दास जी गिरनारि के अनुसार मनुष्य शरीर की सार्थकता तभी है जब प्रतिदिन ३ घन्टे का समय कम से कम भगवत पूजा, ध्यान व सत्सङ्ग में बीते।

सन्तों के अनुसार मनुष्य योनि दुर्लभ होते हुए भी यदि इसका सदुपयोग न किया जावे तो पशु योनि से भी निकृष्ट है। पशु योनि में जीव अपने पूर्व जन्म के पापों को भोग कर काटता है पर असावधान पुरुष मनुष्य योनि में नये पाप कर्मों को तैयार कर लेता है और भावी जीवन में दुख भोगने का रास्ता तैयार करता है। केवल मनुष्य योनि ही में कर्म का अधिकार है। चाहे जितना जीव अपने को आगे बढ़ाले, अतएव शुभ कर्मों का इस पृथ्वी पर बहुत महत्व है।

सन्त वचनों के अनुसार :

> तन पवित्र सेवा किये, धन पवित्र करि दान।
> मन पवित्र हरि भजन किए, होवे त्रिविध कल्याण॥

धन ईमानदारी द्वारा कमाया हो, तन स्वस्थ्य हो और मन पाप कर्म की ओर न जाता हो तो भी यह स्वभाव से अपवित्र है

जब तक कि उपरोक्त कर्म से पवित्र न किया जाय । कल्याण का मार्ग यही है ।

धन की पवित्रता उचित पात्र को प्रयत्न द्वारा दान एवं देव लोक के कार्य करने से ही सम्भव है, नहीं तो आने वाली पीढ़ी पर धन का दुष्प्रभाव हो जाता है ।

यह अनुभव की बात है कि धन यदि देव लोक के कार्य में परिश्रम करके भक्ति पूर्वक लगाया जाय तो कई गुना होकर पूर्ण पवित्रता से लौटता है ।

आशा है पाठक गण इन विचारों के साथ प्रस्तुत पुस्तक का पूर्ण लाभ उठायेंगे ।

ओंकार नाथ भार्गव
प्रभु टाउन, राय बरेली

६/८/८६

प्रस्तुत पुस्तक में नित्य उपयोगी कवच व प्राणप्रतिष्ठा युक्त न्यास अर्थ सहित संग्रहित है । जिनका उपयोग आवश्यकतानुसार प्रतिदिन किया जा सकता है ।

कवच महत्व

प्राचीन काल में युद्ध के समय सैनिक कवच का प्रयोग करते थे, यह कवच लोहे व चमड़े के होते थे व इनका उद्देश्य था शरीर की रक्षा करना । इसी प्रकार अध्यात्मिक रूप से मंत्रों द्वारा अपनी रक्षा को कवच साधना कहते हैं । विभिन्न देवी देवताओं की उपासना में मंत्रों को निम्न प्रकार से विभाजित किया जा सकता है ।

बीज मंत्र—देव भक्ति के लिए उसी प्रकार से जैसे खेत में बीज डाला जाता है ।

स्तोत्र व स्तुति—देवता की प्रार्थना

कवच—सर्व प्रकार से रक्षा, शक्ति तैयार करना व विभिन्न कर्मों में कवच का उपयोग करना ।

शतनाम व सहस्त्रनाम—१०८ व १००० नाम देवी या देवताओं के (यह भी स्तुती के अन्तर्गत है)

हृदय—मुख्य स्तुति, जैसे शरीर में मुख्य स्थान हृदय है ।

इन सब में कवच पाठ प्रमुख माना जाता है । कवच का अर्थ है आच्छादन करना, रक्षा करने वाली कोई भी वस्तु कवच कहलाएगी । जिस तरह लोहे के कवच से शारीरिक सुरक्षा प्राप्त होती है उसी तरह आध्यात्मिक शक्तियों से ओत-प्रोत दैवी कवच का निर्माण अपने को प्रत्येक प्रकार के विघ्नों से रक्षा के लिए किया गया है । कवच पाठ करने पर हृदय में शक्ति व एक प्रकार की सुरक्षा भावना आती है । देवताओं के विभिन्न रूप व गुणों के अनुसार मंत्र सहित प्रत्येक शरीर के अङ्गों की रक्षा का विधान कवच में है ।

योग साधकों के लिए तो कवच साधना एक बहुत ही सरल उपाय है । कवच एक ऐसी अर्जी है जिस पर इष्ट देवता को अमल करना ही पड़ेगा । चाहे मन कितना ही अशान्त हो कवच पढ़ने से शान्त हो जाता है ध्यान लगाने में कवच पाठ अमोध हैं । प्राचीन काल में ब्राह्मण मंत्र विद्या के ज्ञाता थे व नए २ मंत्रों का निर्माण करते थे इसीलिए वो पूज्य थे । मंत्र का अर्थ है मन को घुमाना व कवच इनमें सर्वोपरि है ।

"अनुष्ठान प्रारम्भ करने से पहले गणेश कवच का पाठ अवश्य कर लेना चाहिए । रुद्रयामल तंत्र के अनुसार "पहले स्तोत्र फिर कवच व अन्त में सहस्त्रनाम का पाठ करना चाहिए ।" वाराहीतंत्र के अनुसार "मन ही मन कवच व स्तोत्र का पाठ नहीं करना चाहिए ।" प्रत्येक अक्षर का स्पष्ट उच्चारण इस प्रकार होना चाहिए कि साधक स्वयं सुन सके । कालिका अनुष्ठान में प्रथम कवच व फिर स्तोत्र आदि का पाठ करना चाहिए ।

कालिका, तारा, हनुमान, व भैरव यह उग्र देवी देवता हैं इसलिए इनका पाठ स्त्रियों को गुरू वचन के अनुसार ही करना चाहिए अन्यथा नहीं।नव ग्रह कवच पाठ स्त्री पुरुषों दोनों के लिए है

कवच पाठ करते समय यदि न्यास युक्त करें तो शरीर शुद्धि की भी आवश्यकता नहीं है । मंत्रों में सात्विक, तामसिक व राजसिक तीनों तरह की उपासना हैं । सात्विक साधना में विशेषतया कवच व न्यास पाठ में अनिष्ट होने को किसी भी अवस्था में सम्भावना नहीं है । पापी से पापी मनुष्य भी बगैर किसी अनिष्ट के कवच साधना से भक्ति व शक्ति प्राप्त कर सकता है ।

पाठ करने का समय निर्धारित करने के लिए गणेश व गुरू की उपासना किसी भी अवस्था में कभी भी २४ घन्टे हो सकती है । कालिका व शंकर की रात को, दुर्गा व सूर्य की सुबह शाम व रात्रि में किसी भी समय, हनुमान व तुलसी को प्रातःकाल व सँध्या में और अन्नपूर्णा की सायंकाल में उपयुक्त है ।

प्रत्येक कवच का फल व आवृति उसके अन्त में महत्व के साथ वर्णित है । फिर भी गणपति प्रत्येक प्रकार के विघ्न भगाने के लिए, कालिका—काल उल्लंघन के लिए महामृत्युंज्जय—रोग व व्याधि से मुक्ति के लिए अजर अमर विद्या तैयार करने में, दुर्गा-दुख भगाने के लिए, अन्नपूर्णा-अन्न व भण्डारे के लिए, तुलसी—पतिव्रत धर्म के लिए, विशेष उपयुक्त है ।

शङ्कर भगवान की उपासना—शिवरात्रि, अमावस व सोमवार को, काली उपासना काली चौदस को, देवियों की नवरात्रों में, गणेश जी की चौथ व बुधवार को, हनुमान जी की उपासना मङ्गल को शुरु करने से विशेष फल मिलता है । काली चौदस प्रत्येक देवी देवता की विशेष साधना के लिए महत्वपूर्ण है । इस तिथि को मंत्र सिद्धि तुरन्त प्राप्त होती है ।

प्रत्येक न्यास मंत्रों के पहले जो कोष्ठक दिए गए हैं उनमें इष्टदेवतानुसार बीज मंत्र पढ़कर न्यास करना चाहिए । जो कि विभिन्न देवी देवताओं के लिए निम्नलिखित है ।

देवी व देवता	बीज मंत्र
1 ब्रह्मशक्ति	ॐ हंसोः ब्रह्म (पुरुषों के लिए)
२ पतिव्रत धर्म	ॐ हंसोः पति (स्त्रियों के लिए)
३ गणेश	गं गणपतये नमः (सम्पुटमन्त्रः ह्रीं क्रों ॐ नमः विद्याधिपतये सर्वार्थं सिद्धिदाय सर्व दुख प्रशंनाय एन्हे हि भगबन वादय स्तम्भय स्तम्भय ह्रीं गं गां नमो वह्नि गेहिनी क्रों ह्रीं)
४ कालिका	क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ स्वाहा
५ दुर्गा	ॐ ह्रीं दुन्दुर्गायैःनमः
६ सरस्वती	ॐ ह्रीं ह्सौं सरस्वत्यै नमः
७ अन्नपूर्णा	ॐ ह्रीं भगवती माबेश्वरि अन्नपूर्णायै स्वाहा

८ महामृत्युञ्जय	ॐ जूं सः और ॐ नमः शिवायः (सम्पुटमंत्रः ॐ ह्रौं ॐ जूं सः ॐ भू भुर्वः स्वः ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम ऊर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृर्त्योमुक्षीय भामृतात् ॐ भू भूर्वः स्वरों ॐ जूं सः ऊं ह्रौं ऊं स्वाहा)
९ हनुमान	ह्रौं ह्रस्फ्रें ह्रख्फ्रें ह्रस्त्रौ ह्रूं स्ख्फ्रें हनुमते नमः
१० सूर्य	ऊं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः

अनुष्ठान प्रारम्भ :

मेरु तंत्र के अनुसार अनुष्ठान प्रारम्भ करने के लिए कार्तिक अश्वनि, वैशाख, माघ, मार्गशीर्ष, फाल्गुन व श्रावण मास उत्तम है । शुक्ल पक्ष शुभ है व तिथियों में पूर्णिमा, पंचमी, द्वितीया, सप्तमी, त्रियोदशी व दशमी शुभ हैं वारों में बुध, शुक्र, रवि व गुरु शुभ हैं, मङ्गल व सोम मध्यम फल देने वाले हैं और शनिवार को प्रारम्भ करने से मृत्यु प्राप्त होती है । नक्षत्रों में पुर्नवसु (द्वितीया को), हस्त, श्रवण, रेवती, अनुराधा, तीनों उत्तरा व रोहिणी अश्वनि स्वाती आद्रा कृतिका विशाखा ज्येष्ठा में शुरू करने से शान्ति, पुष्टि, पुण्य व कीर्ति मिलती है । गणपति अनुष्ठान बुधवार को ही शुरू करना चाहिए । चर लग्न में शिव, स्थिर लग्न में विष्णु व द्विस्वाभाव लग्न में शक्ति का अनुष्ठान करें। अनुष्ठान शुरू करने में यदि चन्द्रमा मेष का हो तो धन धान्य प्राप्ती, वृष का हो तो मरण, मिथुन का हो तो आपत्ति नाश, कर्क का हो तो सर्वसिद्धि, सिंह का हो तो बुद्धिनाश, कन्या का हो तो लक्ष्मी प्राप्ति, तुला का हो तो सर्वसिद्धि, धन का हो मान विनाश वृश्चिक का हो तो स्वर्ण लाभ, मकर का हो तो पुण्य, कुंभ का हो तो धन स्मृद्धि, मीन का हो तो दुख प्राप्त होता है ।

आसन व दिशा :

कम्बल व कुशा का आसन उत्तम माना गया है । मुख पूर्व या उत्तर की तरफ होना चाहिए । उत्तर में गुरू का वास, पूर्व में देव लोक का, पश्चिम में लक्ष्मी व वरुण और दक्षिण में पितृलोक और यम का वास माना जाता है !

उच्चारण :

जिन व्यक्तियों को संस्कृत व हिन्दी ठीक से नहीं आती वो भी कवच व न्यास का पाठ कर सकते हैं । धीरे २ अभ्यास से उच्चारण स्वयं शुद्ध हो जाएगा व कवच न्यास में उच्चारण ठीक न होने पर भी किसी प्रकार का भय नहीं है ।

दीपक :

यथा सम्भव अनुष्ठान पूर्ण होने तक दीपक जाग्रत रखना चाहिए :

अनुष्ठान पूरा करने का समय :

किसी भी कवच का अनुष्ठान १००० बार पूरा करने के लिए समय निश्चय कर लेना चाहिए कि इतने दिन में समाप्त करना है चाहे १० दिन में १०० बार पाठ हों । या १० पाठ १०० दिन में शक्ति व समयानुसार दिन निश्चित करने चाहिए और प्रयत्न करना चाहिए कि निश्चित अवधि में अनुष्ठान पूरा हो ।

—सम्पादक

माघ कृष्ण

संवत् २०४२

श्री गणेशाय नम:

अथ दैनिककवच संग्रहस्थ विषयानुक्रमणिका

श्री गणेशायनमः

देव प्रतिष्ठा न्यास

प्राणप्रतिष्ठामन्त्र

ॐ अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्मविष्णु-महेश्वर ऋषयः ऋग्यजुसामानिछन्दांसिः चैतन्य रूपा ( ) प्राण शक्ति देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं ममः प्राणस्थापने विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर ऋषिभ्यो नमः शिरसि । ऋग्यजुस्सामच्छन्दोभ्यो नमः मुखे । चेतन रूपा प्राण शक्ति देवतायै नमः हृदये । हलभ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये । स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः पादयो । अव्यक्तायकीलकाय नमो सर्वाङ्गे ।

करन्यास

ॐ आं ह्रीं क्रों ॐ अं कं खं गं घं ङं ( )
आकाश वायु वह्नि जल पृथ्वी आत्मने आं अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ आं ह्रीं क्रों ॐ इं चं छं जं झं ञं ( )
शब्द स्पर्श रूप, रस गन्धात्मने इं तर्जनीभ्यां नमः ।

ॐ आं ह्रीं क्रों ॐ ऊँ टं ठं डं ढं णं ( )
श्रोत्र त्वक् चक्षु जिह्वा घ्राणात्मने ॐ मध्यमाभ्याम् नमः ।

ॐ आं ह्रीं क्रों ॐ एं तं थं दं धं नं ( )
वाक् पाणि पाद पायूपस्थात्मने ऐं अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ आं ह्रीं क्रों ॐ ओं पं फं बं भं मं ( )
वचनादान गमन विसर्ग आनन्दात्मने औं कनिष्ठकाभ्यां नमः ।

ॐ आं ह्रीं क्रों ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ( ) मनो बुद्धि अहंकार चित्तात्मने अः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यास

ॐ आं ह्रीं क्रों ॐ अं कं खं गं घं ङं ( ) आकाश वायु वह्नि जल पृथ्वी आत्मने आं हृदयाय नमः ।

ॐ आं ह्रीं क्रों ॐ इं चं छं जं झं ञं ( ) शब्द स्पर्श रूप रस गन्धात्मने इं शिरसे स्वाहा ।

ॐ आं ह्रीं क्रों ॐ उं टं ठं डं ढं णं ( ) श्रोत्र त्वक् चक्षु जिह्वा घ्राणात्मने ऊं शिखायै वौषट् ।

ॐ आं ह्रीं क्रों ॐ एं तं थं दं धं नं ( ) वाक् पाणि पाद पायूपस्थात्मने ऐं कवचाय हुम् ।

ॐ आं ह्रीं क्रों ॐ ओं पं फं वं भं मं ( ) वचनादान गमन विसर्गानन्दात्मने औं नेत्रत्रयाय वौषट् ।

ॐ आं ह्रीं क्रों ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ( ) मनो बुद्धि अहंकार चित्तात्मने अः अस्त्राय फट् ।

( ) आं नमो नाभितःपाद पर्यन्तम् ।
( ) ह्रीं नमो नाभितः हृदय पर्यन्तम् ।
( ) क्रों नमो हृदयात् मस्तक पर्यन्तम् ।
( ) यं त्वगात्मने नमो हृदये ।
( ) रं असृगात्मने नमो दक्षांसे ।
( ) लं मांसात्मने नमो ककुदि ।
( ) वं मेदस्तत्वात्मने नमो वांमासे ।
( ) शं अस्थ्यात्मने नमो हृदयादिदक्षहस्ताग्रान्तम् ।

( ) षं मज्जात्मने नमो हृदयादि वाम हस्ताग्रान्तम् ।
( ) सं शुक्रात्मने नमो हृदयादि दक्षिण पादाग्रान्तम् ।
( ) हौं ओजआत्मने नमो हृदयादि वाम पादाग्रान्तम् ।
( ) हं प्राणात्मने नमो नाभि पादपर्यन्तम् ।
( ) सं जीवात्मने नमो हृदयादि मस्तकान्तम् ।
( ) लं त्वगात्मने नमो हृदये ।
( ) रं असृगात्मने नमो दक्षांसे ।
( ) हं मांसात्मने नमः ककुदि ।
( ) सं मेदस्तत्त्वात्मने नमो वामांसे ।
( ) वं अस्थ्यात्मने नमो हृदयादिदक्ष हस्ताग्रान्तम् ।
( ) सं मज्जात्मने नमो हृदयादिवामहस्ताग्रान्तम् ।
( ) षं शुक्रात्मने नमो हृदयादिदक्ष पादाग्रान्तम् ।
( ) सं ओजआत्मने नमो हृदयादिवाम पादाग्रान्तम् ।
( ) क्षं प्राणात्मने नमो हृदयादि नाभि पर्यन्तम् ।
( ) सं जीवात्मने नमो हृदयादि मस्तकान्तम् ।

प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र

( ) आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं सं हं ह्रौं ओम् क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ सोहम् ( ) मम प्राण इह प्राणाः इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ओम् क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ ।

( ) आं ह्री क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ह्रौं ओम् क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ सोहम् ( ) मम जीव इह स्थितः इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ओम् क्षं हं ह्रीं ॐ ।

( ) आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ह्रौं ओम् क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ सोहम् ( ) मम सर्वेन्द्रियाणि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ओम् क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ ।

( ) आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं हं सः ह्रौं ॐ क्षं सं हं सः ह्री ॐ सोहम् ( ) मम वाङमन् इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ओम् क्षं सं हं सः ह्री ॐ ।

( ) आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ह्रौं ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ सोहम् ( ) मम चक्षुः इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ओम् क्षं सं हं सः ह्री ॐ ।

( ) आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ह्रौं ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ सोहम् ( ) मम श्रोत्र इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ओम् क्षं सं हं सः ह्री ॐ ।

( ) आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ह्रौं ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ सोहम् ( ) मम घ्राण इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ओम् क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ ।

( ) आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ह्रौं ॐ क्षं सं हं सं ह्री ॐ सोहम् ( ) मम प्राणाः इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ओम क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ ।
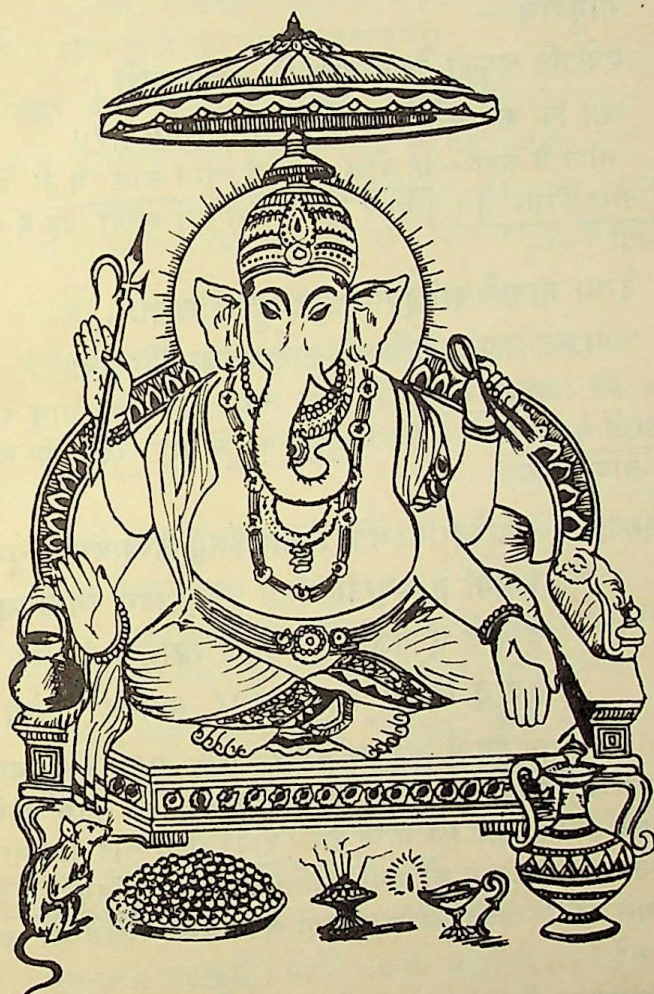
गणेशकवचम्

श्री गणेशायनमः

गौर्युवाच—

एषोऽति चपलो दैत्यान्बाल्येपि नाशयत्यहो ।

अग्रे किं कर्म कर्तेति न जाने मुनि सत्तम ॥१॥

गौरी ने कहा—यह बहुत चंचल है, बाल काल में ही दैत्यों का नाश करता है। मुनिवर ! आगे क्या कर्म करेगा, यह मैं नहीं जानती।

दैत्या नानाविधा दुष्टा साधुदेवद्रुहः खलाः ।

अतोऽस्य कण्ठे किञ्चित्वं रक्षार्थं बद्धुमर्हसि ॥२॥

नाना प्रकार के खल तथा दुष्ट दैत्य, साधु और देवताओं से द्वेष करते हैं। अतः इसके गले में आप रक्षा के लिए कुछ बांध दीजिए।

मुनिरुवाच—ध्यायेत् सिंहगतं विनायकममुं दिग्बाहुमाद्ये युगे ।

त्रेतायां तु मयूरवाहनममुं षड्बाहुकं सिद्धिदम् ॥

द्वापरके तु गजाननं युगभुजं रक्तांग रागं विभुं ।

तुर्ये तु द्विभुजं सितांगरुचिरं सर्वार्थदं सर्वदा ॥

सत्य युग में सिंह पर सवार किये, आठ हाथ वाले विनायक का ध्यान करें। त्रेता में सिद्धिदायक, छः हाथ वाले, मयूर पर सवार गणेश का ध्यान करें। द्वापर में तो चार हाथ वाले गजानन लाल अङ्गराग की जैसी कान्ति वाले तथा कलियुग में दो हाथ वाले श्वेतांग सर्वदा सर्वकार्य पूर्ण करने वाले गणेश जी का ध्यान करें।

विनायकः शिखां पातु परमात्मा परात्परः ।

अति सुन्दरकायस्तु मस्तकं सुमहोत्कटः ॥४॥

परात्पर परमात्मा विनायक चोटी की रक्षा करें, अधिक सुन्दर शरीर वाले सुमहोत्कट मस्तक की रक्षा करें।

ललाटं कश्यपः पातु भ्रूयुगं तु महोदरः ।
नयने भाल चन्द्रस्तु गजास्यस्त्वोष्ठपल्लवौ ॥५॥

ललाट में कश्यप, भौंहों को महोदर, आंखों की भाल-चन्द्र और दोनों होठों की रक्षा गजमुख करें ।

जिह्वां पातु गणाक्रीडश्चिबुकं गिरिजासुतः ।
वाचं विनायकः पातु दन्तान् रक्षतु दुर्मुखः ॥६॥

जिह्वा की रक्षा गणक्रीड, चिबुक की रक्षा पार्वती नन्दन वाणी की रक्षा विनायक और दांतों की रक्षा दुर्मुख करें ।

श्रवणौ पाशपाणिस्तु नासिकां चिंतितार्थदः ।
गणेशस्तु मुखं कंठं पातु देवो गणञ्जयः ॥७॥

पाणिपाश दोनों हाथों की, वाञ्छित फल देने वाले नाक की, गणेश मुख की, गणों को जीतने वाले देव कण्ठ की रक्षा करें ।

स्कन्धौ पातु गजस्कन्धः स्तनौ विघ्न विनाशनः ।
हृदयं गणनाथस्तु हेरंबो जठरं महान् ॥८॥

दोनों कन्धों की रक्षा गज स्कन्ध, स्तनों की विघ्न-नाशक, हृदय की गणनाथ और हेरंब पेट की रक्षा करें ।

धराधरः पातु पार्श्वौ पृष्ठं विघ्नहरः शुभः ।
लिङ्गं गुह्यं सदा पातु वक्रतुण्डो महाबलः ॥९॥

दोनों पार्श्व भाग की धराधर, पीठ की विघ्नहर और लिङ्गगुह्य की रक्षा महाबली वक्रतुण्ड करें ।

गणक्रीडो जानु जंघे ऊरु मंगलमूर्तिमान् ।
एकदन्तो महाबुद्धिः पादौ गुल्फौ सदावतु ॥१०॥

घुटनों तथा जंघाओं की रक्षा गणों में खेलने वाले करें नितम्ब की मंगलमूर्ति, पैर तथा गुल्फ की रक्षा महाबुद्धि वाले एकदन्त करें ।

क्षिप्रप्रसादनो बाहू पाणी आशाप्रपूरकः ।
अंगुलीश्च नखान्पातु पद्महस्तोरिनाशनः ॥११॥

बाहु की रक्षा शीघ्र खुश होने वाले, हाथों की रक्षा आशा पूरक करें, अंगुली तथा नाखूनों की रक्षा हाथ में कमलधारी, शत्रुनाशक करें ।

सर्वाङ्गाणि मयूरेशो विश्वव्यापी सदाऽवतु ।
अनुक्तमपि यत्स्थानं धूम्रकेतुः सदाऽवतु ॥१२॥

संपूर्ण अंङ्गों की रक्षा विश्वव्यापी मयूरेश करें । अकथति स्थानों की रक्षा धूम्रकेतु करें ।

आमोदस्त्वग्रतः पातु प्रमोदः पृष्ठतोऽवतु ।
प्राच्यां रक्षतु बुद्धीश आग्नेयां सिद्धिदायकः ॥१३॥

आगे आमोद, पीछे प्रमोद, पूर्व की ओर बुद्धीश, आग्नेय की ओर सिद्धिदायक रक्षा करें ।

दक्षिणस्यामुमापुत्रो नैऋत्यां तु गणेश्वरः ।
प्रतीच्यां विघ्नहर्ताऽव्याद्वायव्यां गजकर्णकः ॥१४॥

दक्षिण की ओर उमा पुत्र, नैऋत्य की ओर गणेश्वर, पश्चिम की ओर विघ्नहर्ता तथा वायव्य की ओर गज कर्णक रक्षा करें ।

कौबेर्यां निधिपः पायादीशान्यामीशनन्दनः ।
दिवोऽव्यादेकदन्तस्तु रात्रौ संध्यासु विघ्नहृत् ॥१५॥

उत्तर की ओर निधिप, ईशान की ओर ईशनन्दन, दिन में एकदन्त रात्रि में तथा संध्याओं में विघ्नहर्ता रक्षा करें ।

राक्षसासुर वेताल ग्रह भूत पिशाचतः ।
पाशांकुशधरः पातु रजः सत्वतमः स्मृतीः ॥१६॥

राक्षस, असुर, बेताल, ग्रह, भूत, पिशाच से पाशांकुशधारण करने वाले, रजोगुण, सतोगुण तथा तमो गुण से युक्त रक्षा करें ।

ज्ञानं धर्मच लक्ष्मीं च लज्जां कीर्ति तथा कुलम्।
वपुर्धनं च धान्यं च गृह दारान्सुतान्सखीन् ॥१७॥

ज्ञान, धर्म, लक्ष्मी, लज्जा, कीर्ति, कुल, शरीर, धन, धान्य, घर, पत्नी, पुत्र और मित्र की रक्षा सर्वायुधधर करें।

सर्वायुधधरः क्षेत्रं मयूरेशोऽवतात्सदा।
कपिलोऽजाविकं पातु गजाश्वान् विकटोवतु ॥१८॥

खेत की रक्षा सदैव मयूरेश करें। बकरी तथा भेड़ की रक्षा कपिल करें, हाथी तथा घोड़े की रक्षा विकट करें

भूर्जपत्रे लिखित्वेदं यः कंठे धारयेत्सुधीः।
न भयं जायते तस्य यक्ष रक्षः पिशाचतः ॥१९॥

इस कवचं को भोजपत्र में लिखकर जो कोई बुद्धिमान कंठ में धारण करता है, उसको यक्ष, राक्षस तथा पिशाच का कभी भय न रहेगा।

त्रिसन्ध्यं जपते यस्तु वज्रसार तनुर्भवेत्।
यात्रा काले पठेद्यस्तु निर्विघ्नेन फलं लभेत् ॥२०॥

इस कवच को जो कोई तीन सन्ध्याओं में पढ़ता है, उसका शरीर वज्रवत कठोर होता है। यात्रा काल में पढ़ें, तो निर्विघ्न कार्य सफल होता है।

युद्धकाले पठेद्यस्तु विजयं चाप्नुयाद ध्रुवम्।
मारणोच्चाटनाकर्ष स्तंभ मोहन कर्मणि ॥२१॥

युद्ध काल में पढ़ने पर अवश्य विजय पाता है। मारण उच्चाटन, आकर्षण, स्तंभन, मोहन आदि कर्म में।

सप्तवारं जपेदेतद्दिनानामेक विंशतिम्।
तत्तत्फलं मवाप्नोति साधको नात्र संशयः ॥२२॥

७ बार २१ दिन तक जपने से उपर्युक्त फल साधक पाता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

एकविंशतिवारं च पठेत्तावद्दिनानि यः ।
कारागृह गतं सद्यो राज्ञावध्यं च मोचयेत् ॥२३॥

इसे २१ दिनों में २१ बार जो पढ़ता है, वह जेल से (राजा) के बन्धन से छूट जाता है ।

राज दर्शन वेलायां पठेदेत त्रिवारतः ।
स राजानं वशं नीत्वा प्रकृतिञ्च सभां जयेत् ॥२४॥

राजा दर्शन के समय में तीन बार पढ़ने से राजा वश में हो जाता है स्वभावतः सभा जीत जाता है ।

इदं गणेश कवचं कश्यपेनसमीरितम् ।
मुद्‌गलाय च तेनाथ माण्डव्याय महर्षये ॥२५॥

यह गणेश कवच कश्यप ने मुद्‌गल को बताया था मुद्‌गल ने महर्षि माण्डव को बताया था ।

मह्यं स प्राह कृपया कवचं सर्वसिद्धिदम् ।
न देयं भक्ति हीनाय देयं श्रद्धावते शुभम् ॥२६॥

कृपा वश मैंने सर्व सिद्धि देने वाले कवच को बताया—पापी को न देना चाहिए । श्रद्धावान को ही बतायें ।

अनेनास्य कृता रक्षा न बाधाऽस्य भवेत्क्वचित् ।
राक्षसा सुरवेताल दैत्य दानव संभवा ॥२७॥

इस कवच से जो रक्षित रहता है राक्षस, असुर, बेताल, दैत्य, दानव से उत्पन्न किसी प्रकार की बाधा नहीं होती है ।

॥ इति श्री गणेश पुराणे, गणेश कवचं संपूर्णम् ॥

सरस्वती कवचम्

गुरुरुवाच—

शृणु शिष्य ! प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वकामदम् ।
धृत्वा तु सततं सर्वैः प्रपाठ्योऽयं स्तवः शुभः ॥

बृहस्पति जी बोले—हे शिष्य ! सुनो ! संम्पूर्ण कार्य पूरा करने वाले कवच को कहता हूँ। इस शुभ कवच को धारण करके सभी को पाठ करना चाहिए ॥

अस्य श्री सरस्वती स्तोत्र कवचस्य प्रजापति ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, शारदा देवता, सर्वतत्व परिज्ञाने सर्वार्थ साधनेषु च कवितासु च सर्वासु विनियोगः प्रकीर्तितः । इति पठित्वा विनियोगं कुर्यात् ।

इस श्री सरस्वती स्तोत्र कवच के प्रजापति ऋषि अनुष्टुप छन्द, शारदा देवता है सर्वतत्व जानने में, सर्वार्थ साधन में, सभी कविताओं में इसका विनियोग कहा गया है। ऐसा पढ़कर जल छोड़ दें।

ॐ श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा शिरो मे पातु सर्वतः ।
ॐ श्रीं वाग्देवतायै स्वाहा भालंमें सर्वदावतु ॥

ॐ श्रीं ह्रीं सरस्वती के लिए स्वाहा, मेरे शिर की चारों ओर से रक्षा करे। ॐ श्रीं वाणी देवी के लिए स्वाहा मेरे ललाट की हमेशा रक्षा करें।

ॐ सरस्वत्यै स्वाहेति श्रोत्रेपातु निरन्तरम् ।
ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै सरस्वत्यै स्वाहा नेत्र युग्मं सदावतु ।

ॐ सरस्वती के लिए स्वाहा कान में निरन्तर रक्षा करें। ॐ ह्रीं श्रीं भगवती सरस्वती के लिए स्वाहा दोनों नेत्रों की रक्षा सदा करें।

ॐ ऐं ह्रीं वाग्वादिन्यै स्वाहा नासां मे सर्वदावतु ।
ॐ ह्रीं विद्याऽधिष्ठातृ देव्यै स्वाहा चोष्टं सदावतु ॥

ॐ ऐं ह्रीं वाग्वादिनी के लिए स्वाहा मेरे नाक की हमेशा रक्षा करें। ॐ ह्रीं विद्या अधिष्ठात्री देवी के लिए स्वाहा है वह मेरे ओष्ठों की रक्षा करें।

ॐ श्रीं ह्रीं ब्राह्मयै स्वाहेति दन्तपंक्ति सदावतु ।
ॐ ऐं इत्येकाक्षरी मन्त्रो मम कण्ठं सदाऽवतु ॥

ॐ श्रीं ह्रीं ब्राह्मी के लिए स्वाहा वे मेरी दांत की पंक्ति में सदा रक्षा करें ॐ ऐं ऐसा एकाग्रक्षर का मन्त्र मेरे कण्ठ की हमेशा रक्षा करें।

ॐ श्रीं ह्रीं पातु मे ग्रीवां स्कन्धौ मे श्रीः सदावतु ।
ॐ ह्रीं विद्याऽधिष्ठात्री देव्यै स्वाहा वक्षः सदावतु ॥

ॐ श्रीं ह्रीं मेरे गले की रक्षा करें मेरे दोनों स्कन्धों की रक्षा करें। ॐ ह्रीं विद्या की अधिष्ठात्री देवी के लिए स्वाहा वे वक्षस्थल की रक्षा हमेशा करें।

ॐ ह्रीं विद्याऽधिस्वरुपायै स्वाहा मे पातु नाभिकाम् ।
ॐ ह्रीं क्लीं वाण्यै स्वाहेति मम हस्तौ सदावतु ॥

ऊं ह्रीं विद्या अधिस्वरूपा के लिए स्वाहा वे मेरे नाभि की रक्षा करें। ऊं क्लीं वाणी के लिए स्वाहा वे मेरे दोनों हाथों की रक्षा सदा करें।

ॐ सर्ववर्णात्मिकायै स्वाहा पादयुग्मं सदावतु ।
ॐ वागधिष्ठातृ देव्यै स्वाहा सर्वं सदावतु ॥

ऊं सभी वर्णात्मिका स्वरूपिणी देवी के लिए स्वाहा दोनों चरणों की सदा रक्षा करें। ऊं वाणी की अधिष्ठात्री देवी के लिए स्वाहा सदा चारों ओर से रक्षा करें।

अथ दिग् बन्धनम्

ॐ सर्व कण्ठवासिन्यै स्वाहा प्राच्यां सदावतु ।
ॐ सर्व जिह्वाग्रवासिन्यै स्वाहाऽग्नि दिशा रक्षतु ॥

ऊं सभी के कण्ठ में वास करने वाली के लिए स्वाहा पूर्व दिशा की रक्षा करें। ऊं सभी के जिव्हा के आगे रहने वाली के लिए स्वाहा आग्नेय दिशा की रक्षा करें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सरस्वत्यै बुध जनन्यै स्वाहा ।
ॐ सततं मंत्र राजोयं दक्षिणे मां सदावतु ॥

ऊं ऐ ह्रीं श्रीं क्लीं सरस्वती बुध जननी के लिए स्वाहा। ऊं निरन्तर यह मंत्रों का राजा मेरे दक्षिण की ओर रक्षा करें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्र्यक्षरो मन्त्रो नैर्ऋत्ये सर्वदाऽवतु ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जिह्वाग्रवासिन्यै स्वाहा प्रातीच्यां मां सर्वदावतु ॥

ऊं ऐं ह्रीं श्रीं तीन अक्षर का मंत्र नैर्ऋत्य में सदा रक्षा करें। ऊं ऐं ह्रीं जिह्वा के आगे बैठने वाली के लिए स्वाहा, वे पश्चिम में सदा रक्षा करें।

ॐ सर्वाम्बिकायै स्वाहा वायव्ये मां सदाऽवतु ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गद्य पद्य वासिन्यै स्वाहा मामुत्तरे सदावतु ॥

ऊं सबकी अम्बिका के लिए स्वाहा मेरे वायव्य में सदा रक्षा करें। ऊं ऐं ह्रीं क्लीं गद्य पद्य में निवास करने वाली के लिए स्वाहा मुझको उत्तर की ओर से सदा रक्षा करें।

ॐ ऐं सर्वशास्त्रवादिन्यै स्वाहैशान्ये सदावतु ।
ॐ ह्रीं सर्व पूजितायै स्वाहा चोर्ध्वं सदावतु ॥

ऊं ऐं सम्पूर्ण शास्त्र बोलने वाली के लिए स्वाहा ईशान की तरफ हमेशा रक्षा करें। ऊं ह्रीं सभी के द्वारा पूजिता के लिए स्वाहा ऊपर की ओर से हमेशा रक्षा करें।

ॐ ह्रीं पुस्तक वासिन्यै स्वाहा सदाऽधोमां सदावतु ।
ॐ ग्रन्थ बीज स्वरुपायै स्वाहा मां सर्वतोऽवतु ॥

ऊं ह्रीं पुस्तकवासिनी के लिए स्वाहा नीचे से मुझे हमेशा रक्षा करें। ऊं ग्रन्थ (धर्मशास्त्र) के बीज स्वरूपा के लिए स्वाहा मुझे चारों ओर से रक्षा करें।

इति ते कथितं शिष्यं ! ब्रह्म मंत्रौघ विग्रहम्, इदं विश्व विजयं नाम कवचं ब्रह्मरूपकम् ।

हे शिष्य ! सम्पूर्ण पाप नाश करने वाला यह ब्रह्ममन्त्र तुमको बताया। यह विश्व विजय नामक ब्रह्म का रूप है।

इति सरस्वती कवचं सम्पूर्णम् ।

एकादश मुख हनुमत्कवचम्

श्री गणेशाय नमः उक्त चागस्तिसहितायाम् ।

लोपामुद्रोवाच—कुम्भोद्भव दयासिन्धो श्रुतं हनुमतः प्रभोः ।

यन्त्रमन्त्रादिकं सर्वं त्वन्मुखोदीरितं मया ।१

अगस्त्य संहिता में कहा गया है, लोपामुद्रा ने कहा-हे कुम्भोद्भव ! आप तो दया के सागर हैं। मैंने आपके श्रीमुख से कहा हुआ श्री हनुमान् प्रभु । यन्त्र, मन्त्रादिक सभी कुछ श्रवण किया है ॥१॥

दया कुरु मयि प्राणनाथ वेदितुमुत्सहे ।

कवचं वायुपुत्रस्य एकादशमुखात्मनः ॥२

हे प्राणनाथ ! अब आप मुझ पर दया कीजिये। मैं एकादश मुखों वाले हनुमानजी जो वायुदेव के पुत्र हैं, के कवच को जानने का उत्साह करती हूँ ॥२॥

इत्येवं वचनं श्रुत्वा प्रियायाः प्रश्रयान्वितम् ।

वक्तुं प्रचक्रमे तत्र लोपामुद्रां प्रति प्रभुः ॥३

इस प्रकार के विनम्रता से समन्वित अपनी प्रिया के वचनों को सुनकर उस समय में प्रभु ने लोपामुद्रा के प्रति कहने का उपक्रम किया था ॥३॥

अगस्त्य उवाच—

नमस्कृत्वा रामदूतं हनुमन्तं महामतिम् ।

ब्रह्मप्रोक्तं तु कवचं शृणु सुन्दरि सादरम् ॥४॥

अगस्त्यजी ने कहा—महती मतो वाले, श्रीराम के दूत हनुमान जी को नमस्कार करके ब्रह्माजी के द्वारा कहे कवच का हे सुन्दरि ! आदरके साथ श्रवण कोजिए ।४।

सनन्दनाय चक्षुमहच्चतुराननभाषितम् ।
कवचं कामदं दिव्यं सर्वरक्षो निवर्हणम् ॥५

सनन्दन के लिये चतुरानन ब्रह्माजी के द्वारा । कहा हुआ यह महान् कवच सब कामनाओं को देने वाला है, परम दिव्य है और राक्षसों के कुल का निवर्हण करने वाला है ।५।

सर्वसम्पत्प्रदं पुण्यं मर्त्यानां मधुरस्वरे ।
ॐ अस्य श्रीकवचस्यैकादशवक्त्रस्य धीमतः ॥६
हनुमत्कवचमन्त्रस्य सनन्दन ऋषिः स्मृतः ।
प्रसन्नात्मा हनूमांश्च देवताऽत्र प्रकीर्तिता ॥७

हे मधुरस्वरे ! यह कवच सब सम्पदाओं के करने वाला है और मनुष्यों के लिये परम पुण्यमय है । इस धीमान एकादश मुखों वाले के कवच के तथा हनुत्कवच मंत्र के सनन्दन ऋषि कहे गये हैं और प्रसन्न आत्मा वाले हनुमान् इसके देवता हैं ।६-७

छन्दोऽनुष्टुप्समाख्यातं बीजं वायुसुयस्तथा ।
मुख्यात्र प्राणशक्तिश्च विनियोगः प्रकीर्तितः ॥८

इसका छन्द अनुषटुप् है और वायुसुत बीज कहा गया है और यहाँ पर मुख्य प्राणशक्ति है ऐसा विनियोग कहा गया है ।८।

ॐ स्फ्रें बीजशक्तिधृक्पातु शिरो मे पवनात्मजः
अंगुष्ठाभ्यां नमः । क्रौं बीजात्मा नयनयोः
पातु मां वानरेश्वरः तर्जनीभ्यां नमः ॥९
ॐ क्षम्जवीरूपी कर्णौ मे सीताशोकविनाशनः
मध्यमाभ्यां नमः । ग्रों ग्लौं बीजवाच्यो नासां मे
लक्ष्मणप्राणदायकः अनामिकाभ्यां नमः ॥१०

अब करन्यास बताया जाता है दोनों करों के अंगुष्ठ आदि पर मन्त्र का भाग बोलकर न्यास निम्न प्रकार है—स्फ्रें बीज शक्ति के धारण करने वाले पवन के आत्मज मेरे शिर की रक्षा करें। इसके साथ अंगुष्ठों का स्पर्श करें। क्रौं बीजात्मा वानरेश्वर मेरे नयनों की रक्षा करें, इसके साथ तर्जनियों का स्पर्श करें। ॐ क्षं बीज रूपी सीता के शोक का विनाश करने वाले मेरे दोनों कानों की रक्षा करें इसके साथ मध्यमाओं का स्पर्श करें। ओं ग्लौं बीज वाच्य लक्ष्मण के प्राण के देने वाले मेरे नासिका की रक्षा करें, इसके साथ अनामिकाओं को स्पर्श करें। ।९-१०।

ओं वं बीजार्थश्च कण्ठं मे अक्षयक्षयकारकः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ओं रां बीजवाच्यो हृदयं पातु मे कपिनायकः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥११

ॐवं अक्षय क्षयकारक बीजार्थ मेरे कण्ठ की रक्षा करें। इसके साथ कनिष्ठा का स्पर्श करें। ओ रां बीज वाच्य कपिनायक मेरे हृदय की रक्षा करें, इसके साथ करतल कर पृष्ठों का स्पर्श करें।

ओं वं बीजकीर्तिः पातु बाहु मे चांञ्जनीसुतः।
ओं ह्रां बीजं राक्षसेन्द्रस्य दर्पहा पातुचोदरम् ॥१२

ओं वं कीर्त्तित अञ्जनीसुत मेरी दोनों बाहुओं की रक्षा करें। ओ ह्रां बीज राक्षसेन्द्र के दर्प का हरण करने वाले उदर की रक्षा करें।१२।

हंसौंबीजमयोमध्यं मे पातु लंका विदाहकः।
ह्रीं बीजधरो गुह्यं मे पातु देवेन्द्रवन्दितः ॥१३

ह्रं सौ बीज लङ्काके विदाह करने वाले मेरे अधोमध्य की रक्षा करें। ऊं बीजधर देवेन्द्र के द्वारा वन्दित मेरे गुह्य की रक्षा करें।१३।

रं बीजात्मा सदा पातु चोरू मे वार्धिलंघनः ।
सुग्रीव सचिवः पातु जानुनी मे मनोजवः
पादु पादतले पातु द्रोणाचल धरो हरिः ॥१४

रं बीजात्मा वारिधि के लांघने वाले सदा मेरे दोनों उरुओं की रक्षा करें। सुग्रीव के सचिव मन के समान वेग वाले मेरे दोनों जानुओं की रक्षा करें ।१४।

आपादमस्तकं पातुरामदूतो महाबलः ।
पूर्वे वानरवक्त्रो माचाग्नेय्यां क्षत्रियान्तकृत् ॥१५

महान् बल वाले राम-दूत शिर से लेकर पैरों तक मेरा परित्राण करें । पूर्व दिशा में वानर वक्त्र मेरी रक्षा करें आग्नेयी दिशा में क्षत्रियों का अन्त करने वाले रक्षा करें ।१५।

दक्षिणे नारसिंहस्तु नैर्ऋत्यां गणनायकः ।
वारुण्यां दिशि मां मव्यात्खगवक्रो हरीश्वरः ॥१६

दक्षिण में नारसिंह रक्षा करें और नैर्ऋत्य दिशा में गणों के नायक मेरा त्राण करें। वारुणी दिशा में खग मुख मेरी रक्षाकरें।

वायव्यां भैरवमुखः कौबेर्या पातु मां सदा ।
क्रोडास्यः पातु मां नित्यमीशान्यां रुद्ररूपधृक् ॥१७

हरीश्वर वायव्य में भैरव मुख कौबेरी दिशा में सदा मेरी रक्षा करें। ईशानी दिशा में क्रोडास्य मुख रुद्र रूपधारी मेरी नित्य रक्षा करें ।१७।

उर्ध्वं हयाननः पातु त्वधः शेष मुखस्तथा
रामस्तु पातु मां सर्वत्र नित्यं सौम्यरूपी महाभुजः ।
एकादशमुखस्यैतद्दिव्यं वै कीर्तित मया ॥१८

सौम्य रूपी महान् भुजाओं वाले राम मेरी नित्य ही रक्षा करें। यह एकादश मुखों वाले हनुमानजी के दिव्य कवच को मैंने वर्णित कर दिया है ।१८।

रक्षोघ्नं कामंद सौम्यं सर्वसम्पद्विधायकम् ।
पुत्रदं धनदं चोग्रं शत्रु संघविमर्दनम् ॥१९

यह राक्षसों के हनन करने वाला, कामनाओं के प्रदान करने वाला, परम सौम्य सब प्रकार की सम्पदाओं के करने वाला, पुत्र देने वाला, धन प्रदान करने वाला, उग्र और शत्रुओं की सम्पति का मर्दन करने वाला है ।१६।

स्वर्गापवर्गदं दिव्यं चिन्तितार्थप्रदं शुभम् ।
एतत्कवचमज्ञात्वा मन्त्रसिद्धिर्न जायते ॥२०

यह स्वर्गीय सुख और अपवर्ग (मोक्ष) को देने वाला है, यह परम दिव्य, शुभ और चिन्तित किये हुये अर्थ का देने वाला है । इस कवच का ज्ञान न प्राप्त करके कभी मन्त्र की सिद्धि नहीं हुआ करती है ।२०।

चत्वारिंशत्सहस्राणि पठेच्छुद्धात्मना नरः ।
एकवारं पठेन्नित्यं कवचं सिद्धिदं पुमान ॥२१

मनुष्य को शुद्धात्मा से चालीस हजार बार इसका पाठ करना चाहिए । नित्य एक बार इस कवच का पाठ करें तो यह महान् सिद्धि का प्रदान करने वाला होता है ।२१।

द्विवारं वा त्रिवारं वा पठेदायुष्यमाप्नुयात् ।
क्रमादेकादशामेवमावर्तनजपात्सुधीः ॥२२
वर्षान्ते दर्शनं साक्षाल्लभते नात्र संशयः ।
यं यं चिन्तयतेकामं तं तं प्राप्नोति पुरुषः ॥२३

दो अथवा तीन बार इसका पाठ करें तो आयुष्य की प्राप्ति करता है । क्रम में इस प्रकार से सुखी इसकी एकादश आवृति करें तो एक वर्ष के अन्त में श्री हनुमानजी का साक्षात् दर्शन प्राप्त किया करता है-इसमें लेशमात्र भी संशय नहीं है । जिस जिस कामना का चिन्तन किया करता है वह पुरुष उसी-२ को प्राप्त किया करता है ।२२-२३।

ब्रह्मोदीरितमेतद्धि तवाग्रे कथितं महत् । इत्येवमुक्त्वा कवचं महर्षिरतूष्णीं बभूवेन्द्रमुखीं निरीक्ष्य । संहृष्टचित्ताऽपि तदा तदीयौ पादौ ननामातिमुदा स्वभर्तुः ।।२४

ब्रह्माजी ने इसको कहा था वही मैंने तुम्हारे सामने कह दिया है । महर्षि इस प्रकार से कहकर उस इन्द्रमुखी को देखकर चुप हो गये थे । उस समय में वह भी परम प्रसन्न चित्त वाली होती हुई अपने स्वामी के चरणों में अत्यधिक प्रसन्नता से प्रणाम करने वाली हुई थी ।२४।

(इत्यगस्त्य/संहितायामेकादशमुखहनुमत्कंच संपूर्णम्)

सूर्यकवचम्

श्री गणेशायनमः

याज्ञवल्क्य उवाच—

श्रृणुष्व मुनिशार्दूल सूर्यस्य कवचं शुभम् ।
शरीरारोग्यदं दिव्यं सर्व सौभाग्यदायकम् ॥१॥

याज्ञवल्क्य जी बोले—हे मुनि श्रेष्ठ ! सूर्य के शुभ कवच को सुनो जो शरीर को आरोग्य देने वाला है तथा सम्पूर्ण दिव्य सौभाग्य को देने वाला है।

देदीप्यमान मुकुटं स्फुरन्मकर कुण्डलम् ।
ध्यात्वा सहस्र किरणं स्तोत्र मेतदु दीरयेत् ॥२॥

चमकते हुए मुकुट वाले डोलते हुए मकराकृति कुण्डल वाले हजार किरण (सूर्य) को ध्यान करके यह स्तोत्र प्रारम्भ करें।

शिरो मे भास्करः पातु ललाटं मेऽमित द्युतिः ।
नेत्रे दिनमणिः पातु श्रवणे वासरेश्वरः ॥३॥

मेरे शिर की रक्षा भास्कर करें, अपरिमित कान्ति वाले ललाट की रक्षा करें, नेत्र (आखों) की रक्षा दिनमणि करें तथा कान की रक्षा दिन के ईश्वर करें।

घ्राणं धर्म घृणिः पातु वदनं वेदवाहनः ।
जिह्वां मे मानदः पातु कण्ठं मे सुर वन्दितः ॥४॥

मेरे नाक की रक्षा घर्मघृणि, मुख की रक्षा वेदवाहन, जिह्वा की रक्षा मानद तथा कण्ठ की रक्षा देववन्दित करें।

स्कन्धौ प्रभाकरः पातु वक्षः पातु जनप्रियः ।
पातु पादौ द्वादशात्मा सर्वाङ्ग सकलेश्वरः ॥५॥

मेरे स्कन्धों की रक्षा प्रभाकर, छाती की रक्षा सर्वजनप्रिय, पैरो की रक्षा बारह आत्मावाले तथा सर्वाङ्ग की रक्षा सबके ईश्वर करें।

सूर्य रक्षात्मक स्तोत्रं लिखित्वा भुर्जपत्रके ।
दधाति यः करे तस्य वशगाः सर्वं सिद्धयः ॥६॥

सूर्य रक्षात्मक इस स्तोत्र को भोजपत्र में लिखकर जो हाथ में धारण करता है उसके सम्पूर्ण सिद्धियां वश में हो जाती हैं ।

सुस्नातो यो जपेत् सम्यग्योधीते स्वस्थ मानसः ।
स रोग मुक्तो दीर्घायुः सुखं पुष्टिं च विंदति ॥

स्नान करके जो कोई स्वस्थ चित्त से कवच का पाठ करता है वह रोग से मुक्त हो जाता है, दीर्घायु होता है, सुख तथा पुष्टि प्राप्त करता है ।

इति श्रीमद्याज्ञवल्क्य विरचित सूर्यकवच स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

कालिकाकवचम्

कैलासशिखरासीनं देवदेवं जगद्गुरुम् । शङ्करं परिपप्रच्छ पार्वती परमेश्वरम् ॥१॥ पार्वत्युवाच ॥ भगवन देवदेवेश देवानां भोगद प्रभो । प्रब्रूहि मे महादेव गोप्यं चेद् यदि हे प्रभो ॥२॥ शत्रूणां येन नाशः स्यादात्मनो रक्षणं भवेत् । परमैश्वर्यमतुलं लभेद्येन हि तद्वद ॥३॥ ॥ भैरव उवाच ॥ वक्ष्यामि ते महादेवि सर्वधर्मविदां वरे । अद्भुतं कवचं देव्याः सर्वकामप्रसाधकम् ॥४॥ विशेषतः शत्रुनाशं सर्वरक्षाकरं नृणाम् । सर्वारिष्टप्रशमनं सर्वाभद्रविनाशनम् ॥५॥ सुखदं भोगदं चैव वशीकरणमुत्तमम् । शत्रुसङ्घाः क्षयं यान्ति भवन्ति व्याधिपीडिताः ॥६॥ दुःखिनो ज्वरिणश्चैव स्वाभीष्टद्रोहिणस्तथा । भोग-मोक्षप्रदं चैव कालिका-कवचं पठेत् ॥७॥ ॐ अस्य श्रीकालिकाकवचस्य भैरव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकालिका देवता, शत्रुसंहारार्थं जपे विनियोगः । ॥ ध्यानम् ॥ ध्यायेत् कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम् । चतुर्भुजां ललज्जिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम् ॥८॥ नीलोत्पलदलश्यामां शत्रुसङ्घविदारिणीम् । नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं च वरं तथा ॥९॥ निर्भयां रक्तवदनां दंष्ट्रालीघोर-रूपिणीम् । साट्टहासाननां देवीं सर्वदां च दिगम्बरीम् ॥१०॥ शवासनस्थितां कालीं मुण्डमालाविभूषिताम् । इति ध्यात्वा महाकालीं ततस्तु कवचं पठेत् ॥११॥ ॐ कालिका घोररूपा सर्वकामप्रदा शुभा । सर्वदेवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे ॥१२॥ ॐ ह्रीं ह्रीं रूपिणीं चैव ह्रां ह्रीं ह्रां रूपिणीं तथा । ह्रां ह्रीं क्षौं क्षौं स्वरूपा सा सदा शत्रून् विदारयेत् ॥१३॥ श्रीं ह्रीं ऐंरूपिणीं

देवी भवबन्धविमोचनी । हुंरूपिणो महाकाली रक्षाऽस्मान् देवी सर्वदा ॥१४॥ यया शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुरः । वैरिनाशाय वन्दे तां कालिकां शङ्करप्रियाम् ॥१५॥ ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहिका । कौमार्यैन्द्री च चामुण्डा खादन्तु मम विद्विषः ॥१६॥ सुरेश्वरी घोररुपा चण्डमुण्ड-विनाशिनी । मुण्डमालावृताङ्गी च सर्वतः पातु मां सदा ॥१७॥ ह्रां ह्रीं ह्रीं कालिके घोरे दंष्ट्रेव रुधिरप्रिये । रुधिरापूर्णवक्त्रे च रुधिरेणावृतस्तनि ॥१८॥

मम शत्रून् खादय खादय हिंस हिंस मारय मारय भिन्धि भिन्धि छिन्धि छिन्धि उच्चाटय उच्चाटय द्रावय द्रावय शोषय शोषय स्वाहा । ह्रां ह्रीं कालिकायै मदीयशत्रून् समर्पयामि स्वाहा । ॐ जय जय किरि किरि किटि किटि कट कट मर्द मर्द मोहय मोहय हर हर मम रिपून् ध्वंस ध्वंस भक्षय भक्षय त्रोटय त्रोटय यातुधानान् चामुण्डे सर्वजनान् राज्ञो राजपुरुषान् स्त्रियो मम वश्यान कुरु कुरु तनु तनु धान्यं धनं मेऽश्वान् गजान रत्नानि दिव्यकामिनीः पुत्रान् राजश्रियं देहि यच्छ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः स्वाहा ।

इत्येतत् कवचं दिव्यं कथितं शम्भुना पुरा । ये पठन्ति सदा तेषां ध्रुवं नश्यन्ति शत्रवः ॥१९॥ वैरिणः प्रलयं यान्ति व्याधिता वा भवन्ति हि । बलहीनाः पुत्रहीनाः शत्रवस्तस्य सर्वदा ॥२०॥ सहस्रपठनात् सिद्धिः कवचस्य भवेत्तदा तत्कार्याणि च सिध्यन्ति यथा शङ्करभाषितम् ॥२१॥ श्मशानाङ्गरमादाय चूर्णं कृत्वा प्रयत्नतः । पादोदकेन पिष्ट्वा तल्लिखेल्लोहशालाकया ॥२२॥ भूमौ शत्रून् हीनरूपानुत्तराशिरसस्तथा । हस्तं

दत्त्वा तु हृदये कवचं तु स्वयं पठेत् ॥२३॥ शत्रोः प्राणप्रतिष्ठां तु कुर्यान्मन्त्रेण मन्त्रवित्। हन्यादस्त्रं प्रहारेण शत्रो गच्छ यमक्षयम् ।।२४॥ ज्वलदङ्गारतापेन भवन्ति ज्वरिता भृशम्। प्रोच्छनैर्वामपादेन दरिद्रो भवति ध्रुवम् ॥२५॥ वैरिनाशकरं प्रोक्तं कवचं वश्यकारकम्। परमैश्वर्यदं चैव पुत्र पौत्रादि-वृद्धिदम् ॥२६॥ प्रभात समये चैव पूजाकाले च यत्नतः सायङ्काले तथा पाठात् सर्वसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥२७॥ शत्रुरुच्चाटनं याति देशाद् वा विच्युतो भवेत्। पश्चात् किङ्करतामेति सत्यं सत्यं न संशयः ॥२८॥ शत्रुनाशकरे देवि सर्वसम्पत्करे शुभे। सर्वदेवस्तुते देवि कालिके! त्वां नमाम्यहम् ॥२९॥

इति रुद्रयामले कालिकाकवचं सम्पूर्णम्।
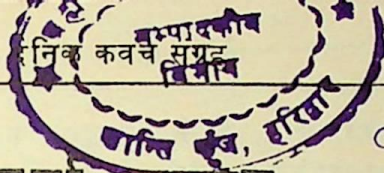
दुर्गा कवचम्

ॐ अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, चामुण्डा देवता, अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम्, दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम् श्री जगदम्बाप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है

मार्कण्डेय उवाच—

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ॥ १ ॥

मार्कण्डेयजीने कहा—पितामह ! जो इस संसार में परम-गोपनीय तथा मनुष्यों की सब प्रकार से रक्षा करनेवाला है और जो अबतक आपने दूसरे किसी के सामने प्रकट नहीं किया हो, ऐसा कोई साधन मुझे बताइये ॥ १ ॥

ब्रह्मोवाच—

अस्ति गुह्यतमं विप्र ! सर्वभूतोपकारकम्।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥ २ ॥

ब्रह्माजी बोले ब्रह्मन ! ऐसा साधन तो एक देवीका कवच ही है, जो गोपनीय से भी परम गोपनीय, पवित्र तथा सम्पूर्ण प्राणियों का उपकार करने वाला है। महामुने उसे श्रवण करो।

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥ ३ ॥
पञ्चमं स्कन्धमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ॥ ४ ॥
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ॥ ५ ॥

देवी के नौ रूप हैं, जिन्हें 'नवदुर्गा' कहते हैं। प्रथम रूप शैलपुत्री है। दूसरा रूप ब्रह्मचारिणी है। तीसरा स्वरूप चन्द्रघण्टा के नाम से प्रसिद्ध है। चौथा कूष्माण्डा है। पांचवीं दुर्गा का नाम स्कन्धमांता है। देवीके छठे रूप को कात्यायनी कहते हैं। सातवां कालरात्रि आठवां स्वरूप महागौरी के नाम से प्रसिद्ध है। नवीं दुर्गा का नाम सिद्धिदात्री है। ये सब नाम सर्वज्ञ महात्मा वेद भगवान के द्वारा ही प्रतिपादित हुए हैं ॥ ३—५ ॥

अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्त्ताः शरणं गताः ॥ ६ ॥
न तेषां जायते किंचिदशुभं रणसंकटे।
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि ॥ ७ ॥

जो मनुष्य अग्नि में जल रहा हो, रणभूमि में शत्रुओं से घिर गया हो, विषम संकट में फँस गया हो तथा इस प्रकार भय से आतुर होकर जो भगवती दुर्गा की शरण में प्राप्त हुए हों, उनका कभी कोई अमङ्गल नहीं होता। युद्ध के समय, संकट में पड़ने पर भी उनके ऊपर कोई विपत्ति नहीं दिखायी देती। उन्हें शोक, दुःख और भय की प्राप्ति नहीं होती ॥ ६-७ ॥

यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः ॥ ८ ॥

जिन्होंने भक्ति पूर्वक देवी का स्मरण किया है, उनका निश्चय ही अभ्युदय होता है। देवेश्वरि! जो तुम्हारा चिन्तन करते हैं, उनकी तुम निःसन्देह रक्षा करती हो ॥ ८ ॥

प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना।
ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना ॥ ९ ॥

चामुण्डा देवी प्रेतपर आरूढ़ होती हैं। वाराही भैंसे पर सवारी करती हैं। ऐन्द्रीका वाहन ऐरावत हाथी है। वैष्णवी देवी गरुड़ पर ही आसन जमाती हैं ॥ ९ ॥

माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया ॥ १० ॥

माहेश्वरी वृषभपर आरूढ़ होती हैं। कौमारी का वाहन मयूर है। भगवान विष्णु की प्रियतमा लक्ष्मी देवी कमल के आसन पर विराजमान है और हाथों में कमल धारण किये हुए हैं ॥ १० ॥

श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषभवाहना।
ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता ॥ ११ ॥

वृषभपर आरूढ़ ईश्वरी देवी ने श्वेत रूप धारण कर रक्खा है। ब्राह्मी देवी हंस पर बैठी हुई है और सब प्रकार के आभूषणों से विभूषित हैं ॥ ११ ॥

इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः ॥ १२ ॥

इस प्रकार ये सभी माताएं सब प्रकार की योगशक्तियों से सम्पन्न हैं। इनके सिवा और भी बहुत सी देवियां हैं, जो अनेक प्रकार के आभूषणों की शोभा से युक्त तथा नाना प्रकार के रत्नों से सुशोभित हैं ॥ १२ ॥

दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः।
शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ॥ १३ ॥
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ॥१४ ॥
दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै ॥ १५ ॥

ये सम्पूर्ण देवियाँ क्रोध में भरी हुई हैं और भक्तों की रक्षा के लिये रथ पर बैठी दिखायी देती हैं। शङ्ख, चक्र, गदा, शक्ति, हल और मुसल, खेटक और तोमर, परशु तथा पाश, कुन्त और त्रिशूल एवं उत्तम शार्ङ्ग धनुष आदि अस्त्र-शस्त्र अपने हाथो में धारण करती हैं। दैत्यों के शरीर का नाश करना, भक्तों को अभयदान देना और देवताओं का कल्याण करना—यही उनके शस्त्र धारण का उद्देश्य है ॥ १३-१५ ॥

नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे ।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि ॥१६॥

[कवच आरम्भ करने के पहले इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिये] महान् रौद्ररूप, अत्यन्त घोर पराक्रम, महान् बल और महान् उत्साहवाली देवि ! तुम महान् भय का नाश करने वाली हो, तुम्हें नमस्कार है ॥ १६ ॥

त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्द्धिनि ।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता ॥१७॥

दक्षिणेऽवतु वाराही नैऋर्त्यां खड्गधारिणी ।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी ॥१८॥

तुम्हारी ओर देखना भी कठिन है । शत्रुओं का भय बढ़ाने वाली जगदम्बिके ! मेरी रक्षा करो

पूर्व दिशा में ऐन्द्री (इन्द्रशक्ति) मेरी रक्षा करें । अग्निकोण में अग्निशक्ति, दक्षिण दिशा में वाराही तथा नैऋर्त्यकोण में खड्गधारिणी मेरी रक्षा करे । पश्चिम दिशा में वारुणी और वायव्यकोण में मृग पर सवारी करने वाली देवी मेरी रक्षा करे ॥ ॥ १७-१८ ॥

उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी ।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा ॥१९॥

उत्तर दिशा में कौमारी और ईशानकोण में शूलधारिणी देवी रक्षा करे । ब्रह्माणि ! तुम ऊपर की ओर से मेरी रक्षा करो और वैष्णवी देवी नीचे की ओर से मेरी रक्षा करे ॥ १९ ॥

एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना ।
जया मे चागतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ॥२०॥

इसी प्रकार शव को अपना वाहन बनाने वाली चामुण्डा देवी दसों दिशाओं में मेरी रक्षा करे । जया आगे से और विजया पीछे की ओर से मेरी रक्षा करे ॥ २० ॥

अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ॥२१॥

वामभाग में अजिता और दक्षिण भाग में अपराजिता रक्षा करें। उद्योतिनी शिखा की रक्षा करे। उमा मेरे मस्तकपर विराजमान होकर रक्षा करे ॥ २१ ॥

मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ॥२२॥

ललाट में मालाधरी रक्षा करे और यशस्विनी देवी मेरी भौंहों का संरक्षण करे। भौंहों के मध्यभाग में त्रिनेत्रा और नथुनों की यमघण्टादेवी रक्षा करे ॥ २२ ॥

शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी।
कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शाङ्करी ॥२३॥

दोनों नेत्रों के मध्यभाग में शङ्खिनी और कानों में द्वारवासिनी रक्षा करे। कालिका देवी कपोलों की तथा भगवती शांकरी कानों के मूलभाग की रक्षा करे ॥ २३ ॥

नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका।
अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती ॥२४॥

नासिका में सुगन्धा और ऊपर के ओठ में चर्चिकादेवी रक्षा करे। नीचे के ओठ में अमृतकला तथा जिह्वा में सरस्वती रक्षा करे ॥ २४ ॥

दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका।
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ॥२५॥

कौमारी दाँतों की और चण्डिका कण्ठप्रदेशकी रक्षा करे। चित्रघण्टा गले की घाँटी की और महामाया तालू में रहकर रक्षा करे ॥२५॥

कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ॥२६॥

कामाक्षी ठोढ़ी की और सर्वमङ्गला मेरी वाणीकी रक्षा करे। भद्रकाली ग्रीवा में और धनुर्धरी पृष्ठवंश (मेरुदण्ड) में रहकर रक्षा करे ॥ २६ ॥

नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी ।
स्कन्धयोः खङ्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी ॥२७॥

कण्ठ के बाहरी भाग में नीलग्रीवा और कण्ठ की नली में नलकूबरी रक्षा करे । दोनों कन्धों में खङ्गिनी और मेरी दोनों भुजाओं की वज्रधारिणी रक्षा करे ॥ २७ ॥

हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च ।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी ॥२८॥

दोनों हाथों में दण्डिनी और अंगुलियों में अम्बिका रक्षा करे । शूलेश्वरी नखों की रक्षा करे । कुलेश्वरी कुक्षि (पेट) में रहकर रक्षा करे ॥ २८ ॥

स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनःशोकविनाशिनी ।
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ॥२९॥

महादेवी दोनों स्तनों की और शोकविनाशिनी देवी मन की रक्षा करे । ललिता देवी हृदय में और शूलधारिणी उदर में रह कर रक्षा करे ॥ २९ ॥

नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी ॥३०॥

नाभि में कामिनी और गुह्यभाग की गुह्येश्वरी रक्षा करे । पूतना और कामिका लिङ्ग की और महिष-वाहिनी गुदा की रक्षा करे ॥ ३० ॥

कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी ।
जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी ॥३१॥

भगवती कटिभाग में और विन्ध्यवासिनी घुटनों की रक्षा करे सम्पूर्ण कामनाओं को देने वाली महाबला देवी दोनों पिण्डलियों की रक्षा करे ॥ ३१ ॥

गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी ।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी ॥३२॥

नारसिंही दोनों पिण्डलियों की और तैजसी देवी दोनों चरणों के पृष्ठ भाग की रक्षा करे । श्री देवी पैरों की अङ्गुलियों में और तलवासिनी पैरों के तलुओं में रहकर रक्षा करे ॥ ३२ ॥

नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ।
रोमकूपेषु कौवेरी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥३३॥

अपनी दाढ़ों के कारण भयंकर दिखायी देने वाली दंष्ट्राकराली देवी नखों की और ऊर्ध्व केशिनि देवी केशों की रक्षा करे। रोमावलियों के छिद्रों में कौबेरी और त्वचा की वागीश्वरी देवी रक्षा करे ।

रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती ।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी ॥३४॥

पार्वती देवी रक्त, मज्जा, वसा मांस, हड्डी और मेद की रक्षा करें। आंतो की कालरात्रि और पित्तकी मुकुटेश्वरी रक्षा करे ॥ ३४ ॥

पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा ।
ज्वालामुखी नखज्वालाभभेद्या सर्वसन्धिषु ॥३५॥

मूलाधार आदि कमलकोशों में पद्मावती देवी और कफ में चूडामणि देवी स्थित होकर रक्षा करे। नख के 'तेज' की ज्वालामुखी रक्षा करे । जिसका किसी भी शस्त्र से भेदन नहीं हो सकता, वह अभेद्या देवी शरीर की समस्त सन्धियों में रहकर रक्षा करे ॥ ३५

शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा ।
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी ॥३६॥

ब्रह्माणि ! आप मेरे वीर्य की रक्षा करे। छत्रेश्वरी छाया की तथा धर्मधारिणी देवी मेरे अहंकार, मन और बुद्धि की रक्षा करे।

प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम् ।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना ॥३७॥

हाथ में वज्र धारण करने वाली वज्रहस्ता देवी मेरे प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान वायु की रक्षा करे । कल्याण से शोभित होने वाली भगवती कल्याणशोभना मेरे प्राण की रक्षा करे ॥ ३७ ॥

रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी ।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा ॥३८॥

रस, रूप, गन्ध, शब्द और स्पर्श—इन विषयों का अनुभव करते समय योगिनी देवी रक्षा करे तथा सत्व-गुण, रजोगुण और तमोगुण की रक्षा सदा नारायणी देवी करे ॥ ३८ ॥

आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी ।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मी च धनं विद्यां च चक्रिणी ।।३६।।

वाराही आयु की रक्षा करे । वैष्णवी धर्म की रक्षा करे तथा चक्रिणी (चक्र धारण करने वाली) देवी यश, कीर्ति, लक्ष्मी, धन तथा विद्या की रक्षा करे ।। ३६ ।।

गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशुन्मे रक्ष चण्डिके ।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी ।।४०।।

इद्राणि ! आप मेरे गोत्र की रक्षा करे। चण्डिके ! तुम मेरे पशुओं की रक्षा करो। महालक्ष्मी पुत्रों की रक्षा करे और भैरवी पत्नी की रक्षा करे ।। ४० ।।

पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा ।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता ।।४१।।

मेरे पथ की सुपथा तथा मार्ग की क्षेमकरी रक्षा करे। राजा के दरबार में महालक्ष्मी रक्षा करे तथा सब ओर व्याप्त रहने वाली विजया देवी सम्पूर्ण भयों से मेरी रक्षा करे ।।१४ ।।

रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु ।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी ।।४२।।

देवी ! जो स्थान कवच में नहीं कहा गया है, अतएव रक्षा से रहित है, वह सब तुम्हारे द्वारा सुरक्षित हो; क्योंकि तुम विजयशालिनी और पापनाशिनी हो ।।४२ ।।

पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः ।
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रै व गच्छति ।।४३।।
तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः ।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ।।४४।।

यदि अपने शरीर का भला चाहे तो मनुष्य बिना कवच के कहीं एक पग भी न जाय कवच का पाठ करके ही यात्रा करे ।

कवच के द्वारा सब ओर से सुरक्षित मनुष्य जहाँ-जहां भी जाता है, वहां-वहां उसे धन-लाभ होता है तथा सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि करने वाली विजय की प्राप्ति होती है। वह जिस-जिस अभीष्ट वस्तु का चिन्तन करता है, उस-उसको निश्चय ही प्राप्त कर लेता है। वह पुरुष इस पृथ्वी पर तुलना रहित महान् ऐश्वर्य का भागी होता है ॥४३-४४

निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः ।
त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ॥४५॥

कवच से सुरक्षित मनुष्य निर्भय हो जाता है। युद्ध में उसकी पराजय नहीं होती तथा वह तीनों लोकों में पूजनीय होता है॥ ४५

इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः ॥४६॥

दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः ।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥४७॥

देवी का यह कवच देवताओं के लिये भी दुर्लभ है। जो प्रतिदिन नियमपूर्वक तीनों सँध्याओं के समय श्रद्धा के साथ इसका पाठ करता है, उसे दैवी कला प्राप्त होती है तथा वह तीनो लोकों में कहीं भी पराजित नहीं होता। इतना ही नहीं, वह अपमृत्यु से रहित हो सौ से भी अधिक वर्षों तक जीवित रहता है॥ ४६-४७।

नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः ।
स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम् ॥४८॥

मकरी, चेचक और कोढ़ आदि उसकी सम्पूर्ण व्याधियाँ नष्ट हो जाती है। कनेर, भाँग, अफीम, धतूरे आदि का स्थावर विष, साँप और बिच्छू आदि के काटने से चढ़ा हुआ जङ्गम विष तथा अहिफेन और तेल के संयोग आदि से बनने वाला कृत्रिम विष—ये सभी प्रकार के विष दूर हो जाते हैं उनका कोई असर नहीं होता॥ ४८ ॥

अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयाणि भूतले ।
भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः ॥४६॥
सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा ।
अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ॥५०॥
ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ।
ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ॥५१॥
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ।
मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम् ॥५२॥

इस पृथ्वी पर मारण-मोहन आदि जितने अभिचारिक प्रयोग होते हैं तथा इस प्रकार के जितने मन्त्र, यन्त्र होते हैं, वे सब इस कवच को हृदय में धारण कर लेने पर मनुष्य को देखते ही नष्ट हो जाते हैं । ये ही नहीं पृथ्वी पर विचरने वाले ग्रामदेवता आकाशचारी देवविशेष, जल के सम्बन्ध से प्रकट होने वाले गण, उपदेश मात्र से सिद्ध होने वाले निम्नकोटि के देवता, अपने जन्म के साथ प्रकट होने वाले देवता, कुलदेवता, माला (कण्ठमाला आदि), डाकिनी, शाकिनी, अन्तरिक्ष में विचरने वाली अत्यन्त बलवती भयानक डाकिनियां, ग्रह, भूत पिशाच, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, ब्रह्म-राक्षस, बेताल, कूष्माण्ड और भैरव आदि अनिष्टकारक देवता भी हृदय में कवच धारण किये रहने पर उस मनुष्य को देखते ही भाग जाते हैं। कवचधारी पुरुष को राजासे सम्मान-वृद्धि प्राप्त होती है। यह कवच मनुष्य के तेज की वृद्धि करने वाला और उत्तम है ॥४६-५२॥

यशसा वर्द्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले ।
जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा ॥५३॥
यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम् ।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्रपौत्रिकी ॥५४॥

कवच का पाठ करने वाला पुरुष अपनी कीर्ति से विभूषित भूतलपर अपने सुयश के साथ-साथ वृद्धि को प्राप्त होता है । जो पहले कवच का पाठ करके उसके बाद सप्तशती चन्डीका पाठ करता है, उसकी जब तक वन, पर्वत और काननों सहित यह पृथ्वी टिकी रहती है, तब तक यहाँ पुत्र-पौत्र आदि संतान परम्परा बनी रहती है ॥ ५३-५४ ॥

देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ।

प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः ॥५५॥

फिर देह का अन्त होने पर वह पुरुष भगवती महामाया के प्रसादसे उस नित्य परमपद को प्राप्त होता है, जो देवताओं के लिये भी दुर्लभ है ॥ ५५ ॥

लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते ॥ ॐ ॥५६॥

वह सुन्दर दिव्य रूप धारण करता और कल्याणमय शिव के साथ आनन्द का भागी होता है ॥ ५६ ॥

॥ इति देव्या कवचं सम्पूर्णम् ॥

तुलसी कवच

श्री गणेशायनमः

अस्य श्री तुलसी कवचस्य श्री महादेवी ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्री तुलसी देवता सकल मन ईप्सित कामना सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

इस तुलसी कवच के श्री महादेव, ऋषि, अनुष्टुप छन्द, श्री तुलसी देवता हैं । सम्पूर्ण मनो इच्छित कार्य सिद्धि के लिए जप में विनियोग है । (जल छोड़ें)

तुलसी श्री महादेवि नमः पंकज धारिणी ।

शिरो मे तुलसी पातु भालं पातु यशस्विनी ॥१॥

कमल धारण करने वाली महादेवी तुलसी को नमस्कार है । मेरे शिर की रक्षा तुलसी करे भाल की रक्षा यशस्विनी करें ।

दृशौ मे पद्म नयना श्रीसखी श्रवणे मम ।

घ्राणं पातु सुगन्धा मे मुखं च सुमुखी मम ॥२॥

मेरी आँखों की रक्षा पद्मनयना, कानों की रक्षा श्री सखी, नाक की रक्षा सुगन्धा तथा मेरे मुख की रक्षा सुमुखी करें ।

जिह्वां मे पातु शुभदा कण्ठं विद्यामयी मम ।
स्कन्धौ कल्हारिणी पातु हृदयं विष्णु वल्लभा ॥ ३ ॥

मेरी जिह्वा की रक्षा शुभदा, कण्ठ की रक्षा विद्यामयी स्कन्धों की रक्षा कल्हारिणी तथा हृदय की रक्षा विष्णु वल्लभा करें।

पुण्यदा मे पातु मध्यं नाभिं सौभाग्यदायिनी ।
कटिं कुण्डलिनी पातु उरु नारद वंदिता ॥ ४ ॥

मेरे पीठ व पेट की रक्षा पुण्यदा, नाभि की रक्षा सौभाग्य दायिनी कमर की रक्षा कुण्डलिनी तथा उरू की रक्षा नारद द्वारा वन्दनीया करें।

जननी जानुनी पातु जंघे सकल वंदिता ।
नारायण प्रिया पादौ सर्वाङ्गं सर्व रक्षिणी ॥ ५ ॥

घुटनों की रक्षा जननी, जंघाओं की रक्षा सर्वजनवंदनीया, पैरों की रक्षा नारायणप्रिया तथा संपूर्ण अंगों में सर्व रक्षिणी रक्षा करें।

संकटे विषमे दुर्गे भये वादे महाहवे ।
नित्यं हि सन्ध्ययो पातु तुलसी सर्वतः सदा ॥ ६ ॥

संकट में, विषम परिस्थिति में, किले में, डर के समय में, बोलने में, भयंकर युद्ध में तथा दोनों सन्ध्याओं में हमेशा तुलसी रक्षा करें।

इतीदं परमं गुह्यं तुलस्याः कवचामृतम् ।
मर्त्यानाममृतार्थाय भीतानामभयाय च ॥७॥

यह अतिगुप्त तुलसी के कवच रूपी अमृत मनुष्यों (मरते हुए) के लिए अमृत तथा डरते हुए के लिए अभय प्रदान करने वाला है।

मोक्षाय च मुमुक्षूणां ध्यायिनां ध्यान योगकृत् ।
वशाय वश्य कामानां विद्यायै वेद वादिनाम् ॥ ८ ॥

मोक्षार्थी के लिए मोक्ष ध्यानियों के लिए ध्यान, वशीकरण करने वालों को वश्य, वेद वादियों को विद्या के लिए (यह कवच) है।

द्रविणाय दरिद्राणां पापिनां पाप शान्तये ।
अन्नाय क्षुधितानां च स्वर्गाय स्वर्गमिच्छताम् ॥ ९ ॥

दरिद्रों को धन के लिए, पापियों को पाप शान्ति के लिए, भूखे को अन्न के लिए तथा स्वर्ग चाहने वालों को स्वर्ग के लिए (यह कवच) है।

पशव्यं पशुकामानां पुत्रदं पुत्र कांक्षिणाम् ।
राज्याय भ्रष्टराज्यानाम् शान्तानां च शान्तये ॥१०॥

जानवरों की इच्छा करने वालों को जानवर पुत्र की इच्छा करने वाले के लिए पुत्र, भ्रष्ट राज्य वालों को राज्य, अशान्ति वालों को शान्ति प्रदान करने वाला (यह कवच) है।

भक्त्यर्थं विष्णु भक्तानां विष्णौ सर्वान्तरात्मनि ।
जाप्यं त्रिवर्ग सिद्ध्यर्थं गृहस्थेन विशेषतः ॥११॥

विष्णु भक्तों के सबके अन्तःकरण स्थित विष्णु में भक्ति प्राप्ति के लिए (यह कवच) है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की सिद्धि के लिए गृहस्थों के द्वारा पठनीय है।

उद्यन्तं चण्डकिरणमुपस्थाय कृताञ्जलिः ।
तुलसी कानने तिष्ठन्नासीनो वा जपेदिदम् ।
सर्वान् कामानवाप्नोति तथैव मम सन्निधिम् ॥१२॥

तुलसी के जंगल में बैठकर या खड़े होकर यह कवच जपे तो सम्पूर्ण कार्य सिद्ध हो जाता है वैसे ही मेरे समीप में रहकर जपने से भी कार्य पूरा हो जाता है।

मम प्रियकरं नित्यं हरिभक्ति विवर्धनम् ।
या स्यान्मृत प्रजा नारी तस्या अङ्ग प्रमार्जयेत ॥१३॥

यह कवच मुझे हमेशा प्रसन्न कराने वाला तथा विष्णु की भक्ति बढ़ाने वाला है नारी जिसके बच्चे मर जाते हों उसके अंगों का मार्जन इस कवच से करें।

सा पुत्रं लभते दीर्घ जीविनं चाप्य रोगिणम् ।
वन्ध्याया मार्जयेदङ्ग कुशैर्मन्त्रेण साधकः ॥१४॥

वह नारी दीर्घायु तथा रोग रहित पुत्र प्राप्त करती है। साधक कुशों से मन्त्रद्वारा बांझ स्त्री के अंगों का मार्जन करें।

सोऽपि संवत्सरादेव गर्भं धत्ते मनोहरम् ।
अश्वत्थे राजवश्यार्थी जपेदग्नेः सुरुपभाक् ॥१५॥

वह बांझ स्त्री भा एक वर्ष के भीतर सुन्दर गर्भ धारण करती है। यदि राज्य की इच्छा हो तो पीपल के नाचे बैठकर जपें।

पलाशमूले विद्यार्थी तेजोऽर्थ्यभिमुखो रवेः ।
कन्यार्थी चण्डिका गेहे शत्रुहत्यै गृहे मम ॥१६॥

विद्यार्थी पलाश (ढाक या छूल) के जड़ में बैठकर तेज को चाहने वाला सूर्य के अभिमुख होकर जपे। कन्या चाहने वाला दुर्गामन्दिर में शत्रुनाश के लिए मेरे घर (शिव मन्दिर) में बैठकर जपे।

श्री कामो विष्णु गेहे च उद्याने स्त्री वशाभवेत् ।
किमंत्र वहुनोक्तेन शृणु सैन्येश तत्वतः ॥१७॥

लक्ष्मी की इच्छा वाले वैष्णव मन्दिर में स्त्री वश करने के लिए बगीचा में जपें।

हे कुमार! अधिक कहने से क्या होगा इसको तत्व सहित सुनो।

यं यं काममभि ध्यायेत्तं तं प्राप्नोत्य संशयम् ।
ममगेहगतस्त्वं तु तारकस्य वधेच्छया ॥१८॥

जो जो कार्य सोचता है वह प्राप्त करता है, यह बात ध्रुव सत्य है। तुम तो मेरे घर में तारकासुर को मारने के लिए आए हो।

जपन स्तोत्रं च कवचं तुलसीगतमानसः ।
मण्डलात्तारकं हन्ता भविष्यसि न संशयः ॥१९॥

एकाग्र चित्त से तुलसी स्तोत्र कवच को जपते हुए युद्ध में तारकासुर को मार सकोगे इसमें कोई शंका नहीं है।

इति श्री ब्रह्माण्ड पुराणे तुलसी महात्म्ये हिन्दी टीकायां
तुलसी कवचं संपूर्णम् ।

मङ्गलस्तोत्रम्

गणाधिपो भानु-शशी-धरासुतो बुधो गुरुर्भार्गवसूर्यनन्दनाः ।
राहुश्च केतुश्च परं नवग्रहाः कुर्वन्तु वः पूर्णं मनोरथं सदा ॥ १ ॥

उपेन्द्र इन्द्रो, वरुणो हुताशनस्त्रिविक्रमो भानुसखश्चतुर्भुजः ।
गन्धर्व-यक्षोरग-सिद्ध-चारणाः कुर्वन्तु वः पूर्णं मनोरथं सदा ॥ २ ॥

नलो दधीचिः सागरः पुरूरवा शाकुन्तलेयो भरतो धनञ्जयः ।
रामत्रयं वैन्यबली युधिष्ठिरः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ॥ ३ ॥

मनु-मरीचि-भृगु-दक्ष-नारदाः पाराशरो व्यास-वशिष्ठ-भार्गवाः ।
वाल्मीकि-कुम्भोद्भव-गर्ग-गौतमाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ॥४॥

रम्भा शची सत्यवती च देवकी गौरी च लक्ष्मीश्च दितिश्च रुक्मिणी ।
कूर्मो गजेन्द्रः सचराऽचरा धरा कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ॥ ५ ॥

गङ्गा च क्षिप्रा यमुना सरस्वती गोदावरी वेत्रवती च नर्मदा ।
सा चन्द्रभागा वरुणा त्वसी नदी कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ॥ ६ ॥

तुङ्ग प्रभासो गुरुचक्रपुष्करं गया विमुक्ता बदरी बटेश्वरः ।
केदार-पम्पासरसश्च नैमिषं कुर्वन्तु वः पूर्णं मनोरथं सदा ॥ ७ ॥

शङ्खश्च दूर्वाषित-पत्र चामरं मणिः प्रदीपो वर रत्नकाञ्चनम् ।
सम्पूर्शकुम्भः सुहुतो हुताशनः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथ सदा ॥ ८ ॥

प्रयाणकाले यदि वा सुमङ्गले प्रभातकाले च नृपाभिषेचने ।
धर्मार्थकामाय जयाय भाषितं व्यासेन कुर्यात्त मनोरथ हि तत् ॥ ९ ॥

इति व्यासकृतं मङ्गलस्तोत्रं समाप्तम् ॥
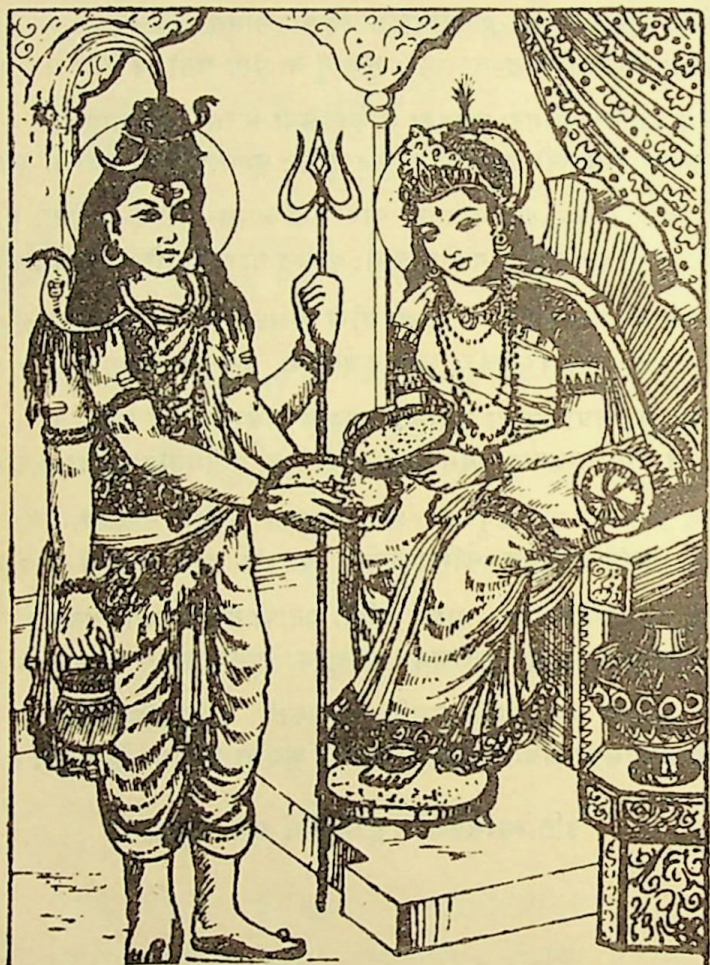
अन्नपूर्णा कवचम्

द्वात्रिंशब्दर्ण मंत्रोऽयं शंकर प्रतिभाषितः।
अन्नपूर्णा महा विद्या सर्व मंत्रोत्तमोत्तमा ॥ १ ॥

शंकर जी द्वारा कथित ३२ अक्षर का यह अन्नपूर्णा का मंत्र महा विद्या तथा मंत्रों में उत्तम मंत्र है।

पूर्वमुत्तरमुच्चार्य संपुटी करणोत्तमम्।
स्तोत्रमन्त्रस्य ऋषिर्ब्रह्मा छन्दो त्रिष्टुबुदाहृतः ॥२॥

प्रारम्भ में तथा अन्त में इसका उच्चारण करके कवच से सम्पुटित करना अच्छा है। इस स्तोत्र के ब्रह्मा ऋषि त्रिष्टुपछन्द कहा गया है।

देवता अन्नपूर्णा च ह्रीं बीजमम्बिका स्मृता।
स्वाहा शक्तिरितिज्ञेयं देवीति कीलकंमतम् ॥ ३ ॥

अन्नपूर्णा देवता है ह्रीं बीज अम्बिका कहा है। स्वाहा शक्ति तथा देवी कीलक ऐसा जानना चाहिए।

धर्मार्थ काम मोक्षेषु विनियोग उदाहृतः।
सप्तार्णव मनुष्याणां जपमंत्र समाहितः ॥४॥
ॐ ह्रीं भगवती माहेश्वरी अन्नपूर्णा यै स्वाहा।

धर्म अर्थ मोक्षों में विनियोग कहा है। सप्तद्विपवती पृथ्वी में सबके लिए मंत्र बराबर कहा है। ऊं ह्रीं बीजरूपा भगवती माहेश्वरी अन्नपूर्णा के लिए स्वाहा।

अन्नपूर्णे इमं मंत्रं मनुसप्तदशाक्षरम्।
सर्वसम्पद प्रदो नित्यं सर्व विश्वकरी तथा ॥५॥

अन्नपूर्णा का यह मंत्र १७ अक्षर का है सभी सम्पत्ति प्रदायक है।

भुवनेश्वरीति विख्याता सर्वाभीष्टं प्रयच्छति ।
हृल्लेखयमितिज्ञे यमोंकाराक्षर रुपिणी ।। ६ ।।

भुवनेश्वरी इस नाम से प्रख्यात है तथा सभी मनोकामना पूर्ण करती है । ओंकार अक्षर स्वरूपिणीं देवी हृदय में लिखित है ऐसा जानना चाहिए ।

कान्ति-पुष्टि-धनाऽऽरोग्यम यशांसि लभते श्रियम् ।
अस्मिन मन्त्रे रतो नित्यं वशयेदखिलं जगत् ।।७।।

कान्ति, पुष्टि, धन, आरोग्य, यश तथा लक्ष्मी देने वाला यह कवच जो नित्य पढ़ता है सारे संसार को वश में कर लेता है ।

अङ्गन्यास

ॐ अस्य श्री अन्नपूर्णा माला मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषये ।
नमः शिरसि । ॐ अन्नपूर्णा देवतायै नमः हृदये ।।८।।

ॐ ह्रीं बीजाय नमः नाभौ । ॐ स्वाहा शक्तये नमः पादयोः । ऊंधर्माऽर्थ काम मोक्षेषु विनियोगायनमः सर्वाङ्गे ।

इस श्री अन्नपूर्णा माला मन्त्रके ब्रह्मा ऋषि शिरमे, ऊं अन्नपूर्णा देवता हृदय में, ऊं ह्लीं बीज नाभि में, स्वाहा शक्ति पैरों में, धर्म अर्थ काम मोक्षों में विनियोग के लिए सभी अंगों का स्पर्श करना (छूना) ।

करन्यास ।। ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः । ॐ ह्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।

इन मंत्रों से क्रमशः अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका कनिष्ठाका का स्पर्श करें ।

हृदय आदि न्यास॥ ॐ ह्रां हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ॐ ह्रैं कवचाय हुम। ॐ ह्रौं नेत्र त्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

इन मंत्रों से क्रमशः छाती, शिर, चोटी दोनों कन्धों, दोनों आंख छूकर के शिरके पीछे से हाथ घुमाकर चुटकी बजादें।

ध्यानम्।रक्तां विचित्र वसनां नवचन्द्रचूडाम्
अन्नप्रदान निरतां स्तनभार नम्राम्
नृत्यन्तमिन्दु सकलाभरणं विलोक्य
हृष्टां भजे भगवतीं भव दुख हन्त्रीम्

लाल एवं चितकबरे वस्त्रों वाली नवीन चन्द्रतुल्य चूडा वाली, अन्नदान करने में तत्पर, कुचों के भार से झुकी हुई, नाचते हुए चन्द्रमा के समान आभरणों को देखकर, सांसारिक दुःख दूर करने वाली अन्नपूर्णा (भगवती) को मैं भजता हूँ।

मालामंत्र ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे ममाऽभिलषितमन्नं देहि स्वाहा।

भगवती माहेश्वरी अन्नपूर्णा। मुझे मनोभिलषित अन्न दे दीजिए।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं। मन्दार कल्प हरि चन्दन पारिजात-मध्ये शशांङ्क मणिमण्डित वेदिसंस्थे अर्धेन्दु मौलि सुललाटषडर्धनेत्रे भिक्षां प्रदेहि गिरिजे क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ॥१॥

मदार, कल्पवृक्ष, सफेद चन्दन, पारिजात आदि के बीच में, चन्द्रमा जैसे सफेद मणियों से निर्मित वेदि में बैठी हुई, केशों के जूड़े में आधा चन्द्र शोभित है, जिनके (६ के आधे) तीन नेत्र शोभायमान हो रहे हैं ऐसी गिरिजा अन्नपूर्णा मुझ भूखे को भिक्षा दें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं केयूर-हार-कनकांगद कर्णपूरे-काञ्ची कलापमणिकान्ति लसद् दुकूले ॥ दुग्धान्न पात्र वर काञ्चन दर्विहस्ते-भिक्षां प्रदेहि॰ गिरिजे व क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥ २ ॥

केयूर, माला, सोने का बाजूबन्द, कर्णफूल, स्वर्ण तथा मणियों से जटित वस्त्रयुक्त, उत्तमपात्रमें दूध मिश्रित अन्न, सोने के चम्मच हाथ में है जिनके ऐसी गिरिजा मुझ भूखे को भिक्षा दें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं आलोकदम्ब परिसेविता पार्श्वभागे शक्रादिभिर्मुकुलिताञ्जलिभिः पुरस्तात् ॥ देवि ! त्वदीय-चरणौ शरणं प्रपद्ये भिक्षां प्रदेहि गिरिजे क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥३॥

सखी जनों से सेवित है पार्श्व भाग जिनका, इन्द्रादि देव द्वारा कमलकलि तुल्य हाथों को अंजलियों के आगे से स्तुवित, ऐसो हे देवि ! आपके चरणों के शरण में आया हूँ। मुझ भूखे को भिक्षा दें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं गन्धर्व-देव-ऋषि-नारद-कौशिकाऽत्रि-व्यासाऽम्बरीष कलशोद्भव कश्यपाद्याः भक्त्या स्तुवन्ति निगमाऽगम सूक्त मन्त्रै भिक्षां प्रदेहि॰ गिरिजे क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥४॥

गन्धर्व, देवता, ऋषि नारद, विश्वामित्र, अत्रि, व्यास, अम्बरीष, अगस्त्य, कश्यप आदि ऋषि वेद धर्म शास्त्रों के सूक्त तथा मन्त्रों से, भक्ति से आपकी स्तुति करते हैं ऐसो आप मुझ भूखे को भिक्षा दें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं लीला वचांसि तव देवि ! ऋगादि वेदाः सृष्ट्यादि कर्मरचना भवदीय चेष्टा । त्वत्तेजसा जगदिदं प्रतिभाति नित्यं भिक्षां प्रदेहि० गिरिजे क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥५॥

हे देवि ! ऋग्, यजु, साम, अथर्ववेद आपकी लीला की वाणी है, सृष्टि, स्थिति, संहार आदि कर्मरचना आपकी चेष्टायें हैं। आपके तेज से यह सम्पूर्ण जगत् हमेशा प्रकाशित रहता है, ऐसी हे गिरिजे ! मुझ भूखे को आप भिक्षा दें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं शब्दात्मिके शशिकला भरणार्ध देहे शंभोरूरस्थलनिकेतन नित्यवासे ॥ दारिद्रय दुःख भयहारिणि का त्वदन्या भिक्षां प्रदेहि० गिरिजे क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥६॥

शब्द ही है आत्मा जिनका ऐसी (हे शब्दात्मिके) ! शब्द स्वरूपे ! चन्द्र कला ही आधे शरीर के आभरण है जिनके ऐसे शंकरजी के छाती रूप घर में नित्य निवास करने वाली हे देवि आपके अतिरिक्त और कौन है जो कि दरिद्रता, दुःख, भय को हरण कर सके मिटा सके हे गिरिजे ! मुझ भूखे को भिक्षा दें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सन्ध्यात्रये सकलभूसुर सेव्यमाने-स्वाहा-स्वधासि पितृदेव गणार्तिहन्त्री । जायाः सुताः परिजनातिथयोऽन्नकामाः भिक्षा प्रदेहि० गिरिजे क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥७॥

तीनों सध्याओं में सभी ब्राह्मण द्वारा सेव्यमान, पितर तथा देवताओं का दुःख विनाश करने वाली (आप) स्वाहा तथा स्वधा हो। पत्नी, पुत्र, सेवकजन तथा अतिथि (ये सब) अन्न के इच्छुक हैं अतः हे गिरिजे- मुझ भूखे को भिक्षा दें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सद्भक्त कल्पलतिके भुवनैकवन्द्य-भूतेश हृत्कमलमग्न कुचाग्र भृङ्गे ॥ कारुण्य पूर्ण नयने किमुपेक्षसे मां-भिक्षां प्रदेहि० गिरिजे क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥८॥

सच्चे भक्त के लिए कल्पलता (मनोरथ पूरा करने वाली) सम्पूर्ण विश्व में वंदनीय शंकरजी के हृदय कमल में जिनके स्तन के आगे का भाग रूप भौरा ऐसे रूप वाली आप करुणा से पूर्ण आखों से क्या मेरे को नहीं दीखेगी, ऐसी गिरिजा मुझ भूखे को भिक्षा दें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं अम्ब ! त्वदीय चरणाम्बुज संश्रयेण ब्रह्मादयोप्यविकलांश्रिय माश्रयन्ते। तस्मादहं तवनतोस्मि पदारविन्दे भिक्षां प्रदेहि० गिरिजे क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥९॥

मां ! आपके चरण कमल के आश्रय से ब्रह्मादि देवता भी कभी नष्ट न होने वाली लक्ष्मी को पाते हैं। अत: मैं आपके चरण कमलों को प्रणाम करता हूँ, हे गिरिजे ! मुझ भूखे को भिक्षा दें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं एकाग्रमूल निलस्य महेश्वरस्य प्राणेश्वरि प्रणत भक्त जनायशीघ्रम् ॥ कामाक्षि रक्षित जगत त्रितयेअन्न पूर्णे भिक्षां प्रदेहि० गिरिजे क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥१०॥

एकाग्र मूल ही है घर जिसके ऐसे शंकर के आप प्राणेश्वरी हो जो भक्तजनों के लिए शीघ्र प्रणत हो। हे कामाक्षि अन्नपूर्णा जी ! आप तीनों लोकों को रक्षा करने वाली हो। गिरिजे मुझ भूखे को आप भिक्षा दें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं भक्त्यां पठन्ति गिरिजादशकं प्रभाते मोक्षार्थिनो बहुजनाः प्रथिताम्न कामाः ॥ प्रीतामहेशवनिता हिमशैल कन्या-तेषां ददाति सुतरां मनसेप्सितानि ॥११॥ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ।

मोक्षार्थी तथा विशेष प्रकार से अन्न चाहने वाले जो मनुष्य प्रातः उठकर गिरिजा के दस श्लोक की इस स्तुति का भक्तिपूर्वक पढ़ते हैं। पर्वत की पुत्री, महेश की पत्नी प्रसन्न होकर उनका मनोरथ सदैव पूर्ण करती हैं।

इति श्री अन्नपूर्णा कवचे हिन्दी टीकायां एतत् कवचं संपूर्णम्

महा मृत्युञ्जय स्तुति

नन्दिकेश्वर उवाच—

कैलासस्योत्तरे श्रंगे शुद्ध स्फटिकसन्निभे ।
तमोगुण विहीने तु जरा मृत्यु विवर्जिते ॥ १ ॥

नन्दिकेश्वर बोले,

कैलास के उत्तर शिखर में, सफेद स्फटिक शिला पर बैठे, तमोगुण रहित, बुढ़ापा तथा मृत्यु से परे और—

सर्वार्थ संपदाधारे सर्वज्ञान कृतालये ।
कृताञ्जलिपुटो ब्रह्मा ध्यानासीनं सदा शिवम् ॥ २॥

सभी प्राप्य वस्तु, संपत्ति के आधार, सभी ज्ञान के भण्डार ध्यानमग्न सदा शिव (हमेशा कल्याण दायक) के सामने हाथ जोड़कर तथा—

पप्रच्छ प्रणतो भूत्वा जानुभ्यामवनि गतः ।
सर्वार्थ संपदाधार ब्रह्मलोक पितामह ॥ ३ ॥

सभी अर्थ तथा सम्पत्ति के आधार, प्रणत होकर छू रहे हैं घुटनों से पृथ्वी जिनके ऐसे ब्रह्मलोक के पितामह ब्रह्माजी पूछने लगे ।

ब्रह्मोवाच—

केनोपायेन देवेश ! चिरायुर्लोमशोऽभवेत ।
तन्मे ब्रूहि महेशान लोकानां हितकाम्यया ॥ ४॥

ब्रह्माजी ने कहा—

देवश ! किस उपाय से लोमश चिरायु हुए । महेश ! वह उपाय लोक कल्याण के लिए मुझे बतलाइए

श्री सदाशिव उवाच—

श्रृणु ब्रह्मन् प्रवक्ष्यामि चिरायुर्मुनि सत्तमः ।
सञ्जातः कर्मणा येन व्याधि मृत्यु विवर्जितः ॥५॥

सदाशिव बोले—

ब्राह्मन् ! सुनो ! मुनि श्रेष्ठ लोमश जी जिस उपाय से रोग तथा मृत्यु से बचकर दीर्घायु हुए सो मैं बताता हूँ ।

तस्मिन्नेकार्णवे घोरे सलिलौघ परिप्लुते ।
कृतान्त भय नाशायस्तुतो मृत्युञ्जयः शिवः ॥ ६ ॥

उस जलमग्न एक घोर समुद्र में यम त्रास निवृत्ति के लिए मृत्युञ्जय शिवकी स्तुति करने लगे ।

तस्य संकीर्तनान्नित्यं मुनि मृत्यु विवर्जितः ।
तमेव कीर्तयन्ब्रह्मन् मृत्युञ्जेतुं न संशयः ॥७॥

उसी (मृत्युञ्जय शिव) के जप सदा करने से मुनि मृत्यु से रहित होकर दीर्घायु हुए थे तथा हे ब्रह्माजी उसी का स्मरण करने से मनुष्य मृत्यु को जीत लेता है । इसमें कोई शंका नहीं है ।

लोमश उवाच—

ओं देवाधिदेव ! देवेश ! सर्वप्राणभृतांवर ।
प्राणोनामामपिनाथस्त्वं मृत्युंजय नमोस्तु ते ॥ ८॥

लोमश ने कहा—

ऊं देवों के भी अधिदेव ! हे देवेश्वर ! आप समस्त प्राणधारियों के लिए श्रेष्ठ हैं । आप ही प्राणियों के नाथ हैं । हे मृत्युज्जय ! आपके लिए मेरा नमस्कार है ।

देहिनां जीवभूतोऽसि जीवोजीवस्य कारणम् ।
जगतां रक्षकस्त्वं वै मृत्युंजय नमोस्तु ते ॥९॥

आप देहधारियों के जीवभूत अर्थात् देहों में जीव स्वरूप हैं आप ही विराजमान रहा करते हैं । जीव ही जीव का कारण हैं । आप समस्त जगतों का रक्षा करने वाले हैं । हे मृत्युञ्जय ! आपके चरण कमलों में मेरा प्रणाम हैं ।

हेमाद्रिशिखराकारसुधावीचिमनो हरे ।
पुण्डरीकपरं ज्योतिर्मृत्युंजय नमोऽस्तु ते ॥१०॥

आप हेमवान् पर्वत की शिखर के आकार में सुधा की तरंगों से मनोहर वन में दूसरे पुण्डरीक की ज्योति है। हे मृत्युञ्जय ! आपकी सेवा में मेरा नमस्कार हे।

ध्यानाधारमहाज्ञान सर्वज्ञानैककारण ।
परित्राणासि लोकानां मृत्युंजय नमोऽस्तुते ॥११॥

आप ध्यान के आधार महाज्ञान हैं और सब प्रकार के ज्ञानों के एक ही कारण है, आप लोकों के परित्राण करने वाले हैं हे मृत्युञ्जय ! आपके लिये मेरा नमस्कार है।

निहता येन कालेन स देवासुरमानुषः ।
गन्धर्वाप्सरश्चैव सिद्धविद्याधरास्तथा ॥१२॥
साध्याश्च वशवो रुद्रास्तथाश्विनिसुतावुभौ ।
मरुतश्च दिशो नागाः स्थावरा जङ्गमास्तथा ॥१३॥
जितः सोऽपि त्वया ध्यानात्मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ।
ये ध्यायन्ति परां मूर्तिम्पूजयन्त्यमरादयः ।
न ते मत्युवशं यान्ति मृत्युञ्जय मनोऽस्तुते ॥१५॥

जिस काल से देव—असुर—मनुष्य—गन्धर्व अप्सरा – सिद्ध— विद्याधर—साध्य—पशुगण—रुद्र—दोनों—अश्विनीकुमार – मरुत- —दिशायें—नाग—स्थावर और जङ्गम सभी को निहित किया है, आप नें उस महान बली काल को भी ध्यान से जीत लिया है। हे मृत्युञ्जय ! आप के लिये मेरा प्रणाम है। जो देवगण आदि इस परामूर्ति का ध्यान किया करते हैं। वे फिर भी मृत्यु के वश में नहीं आया करते हैं। हे मृत्युंजय ! आपको नमस्कार है।१२।१५।

त्वमोङ्कारोऽसि वेदानां देवानां च सदा शिवः ।
आधारशक्तिः शक्तींनां मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ॥१६॥

आप ही वेदों में ऊं कार हैं, आप देवों में सदाशिव हैं, और शक्तियों के भी आधार शक्ति हैं। हे मृत्युंजय ! आपको मेरा नमस्कार है।

स्थावरे जंगमे वापि यावत्तिष्ठति देहिगः ।
जीवत्यपत्यलोकोऽयं मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ॥१७॥

जब तक देह में गमन करने वाले आप स्थावर अथवा जङ्गम में स्थित रहा करते हैं, यह अपत्य लोक जीवित रहता है। हे मृत्यु जय ! आपको नमस्कार।

सोमसूर्याग्निमध्यस्थव्योमव्यापिन् सदाशिवः ।
कालत्रिय महाकाल मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ॥१८॥

सदाशिव आप चन्द्र, सूर्य और अग्नि के मध्य स्थित और व्योम व्यापी हैं। आप ही भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों के स्वरूप हैं। आप महाकाल हैं। हे मृत्युञ्जय ! आपकी सेवा में मेरा प्रणाम हैं।

प्रबुद्धे चाप्रबुद्धे च त्वमेव सृजसे जगत् ।
सृष्टिरूपेण देवेश मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ॥१९॥

हे देवेश्वर ! प्रबुद्ध में और अप्रबुद्ध में सृष्टि के रूपो से आप ही इस जगत् का सृजन करते हैं। हे मृत्युञ्जय ! आपको मेरा नमस्कार हैं।

व्योम्नि त्वं व्योमरूपोऽसि तेजः सर्वत्र तेजसि ।
ज्ञानिनां ज्ञानरूपोऽसि मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ॥२०॥

आप व्योम में व्योम के रूप वाले हैं तेज में सर्वत्र तेजोरूप हैं तथा ज्ञानियों में आप ज्ञान के रूप हैं, हे मृत्युञ्जय ! आपके लिये सादर नमस्कार है।

जगज्जीवो जगत्प्राणः स्रष्टा त्वं जगतः प्रभुः ।
कारणं सर्वतीर्थानां मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ॥२१॥

आप जगत् को जीवन देने वाले जीव हैं, आप जगत् के प्राण हैं और जगत् के सृजन करने वाले तथा इसके प्रभु हैं। आप सब तीर्थों के कारण हैं। हे मृत्युञ्जय ! आपके लिये मेरा नमस्कार है।

नेतात्वमिन्द्रियाणां च सर्वज्ञानप्रबोधकः ।
सांख्ययोगश्च हंसश्च मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ॥२२॥

आप इन्द्रियों के नेता हैं और सब प्रकार के ज्ञान के प्रबोध करने वाले हैं। आप सांख्य-योग हैं और हंस हैं। हे मृत्युंजय ! आपको नमस्कार है ।

रूपातीतः स्वरूपश्च पिण्डस्थपदमेव च ।
चतुर्लोककलाधार मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ॥२३॥

आप रूप से अतीत हैं, सुन्दर रूप वाले भी हैं। आप पिंड में स्थित पद हैं तथा चारों लोकों की कला के आधार हैं। हे मृत्युञ्जय ! आपको प्रणाम है।

रेचके वह्निरूपोऽसि सोमरूपोऽसि पूरके ।
कुम्भके शिवरूपोऽसि मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ॥२४॥

आप प्राणों के रेचन में वह्नि के रूप वाले हैं, पूरक में सोम रूप वाले हैं तथा कुम्भक में शिव के स्वरूप वाले हैं, हे मृत्युंजय ! आपको नमस्कार है ।

क्षयं करोषि पापानां पुण्यानामपिवर्धनम् ।
हेतुस्त्वं श्रेयसां नित्यं मृत्युंजय नमोऽस्तुते ॥२५॥

आप समस्त प्रकार के पापों का क्षय कर देते हैं और पुण्यों के भी वर्धन करने वाले हैं। आप नित्य ही श्रेयों के हेतु हैं। हे मृत्युंजय ! आपको नमस्कार है।

सर्वमायाकलातीते सर्वेन्द्रियपरावर ।
सर्वेन्दियकलाधीश मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ॥२६॥

आप माया की सम्पूर्ण कलाओं से भी परे हैं, सब इन्द्रियों के बराबर हैं तथा समस्त इन्द्रियों की कला के अधीश हैं। हे मृत्युंजय ! आप की मैं वन्दना करता हूँ।

रूपगन्धो रसस्पर्शः शब्द साकार एव च ।
त्वत्तः प्रकाश एतेषां मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ॥२७॥

आप साकार—रस—गन्ध—स्पर्श और शब्द है । इन सबको आप ही से प्रकाश प्राप्त होता है । हे मृत्युञ्जय ! आपको नमस्कार है ।

चतुर्विधानां सृष्टीनां हेतुस्त्वं कारणेश्वर ।
भावाभावपरिच्छिन्न मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ॥२८॥

हे कारणेश्वर ! आप चारों प्रकार की सृष्टियों में हेतु हैं । आप भाव और अभाव से परिच्छिन्न हैं । हे मृत्युञ्जय ! आपको नमस्कार है ।

त्वमेको निष्कलो लोके सकलं भुवनत्रयम् ।
अतिसूक्ष्मातिरूपस्त्वं मृत्युंञ्जय नमोऽस्तु ते ॥२९॥

तीनों भुवन सकल हैं और आप एक ही लोक में निष्कल हैं । आपका अत्यन्त सूक्ष्म रूप है । हे मृत्युंजय ! आपको नमस्कार है ।

त्वंप्रबोधस्त्वमाधारस्त्वद्बीजं भुवनत्रयम् ।
सत्त्वं रजस्तमस्त्वं हि मृत्युंञ्जय नमोऽस्तु ते ॥३०॥

तीनों भुवनों के आप ही प्रबोध एवं आधार है तथा त्रिभुवन के आप ही बीज हैं । सत्त्व-रज और तम भी आपका ही स्वरूप है । हे मृत्युंजय ! आपके लिये नमस्कार है ।

त्वं सोमस्त्वं दिनेशश्च त्वमात्मा प्रकृतेः परः ।
अष्टात्रिंशत् कलानाथ मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ॥३१॥

आप ही सोम हैं—आह दिवाकर हैं और आप ही प्रकृति से रमात्मा हैं । आप अड़तीस कलाओं के नाथ हैं । हे मृत्युंजय ! आपको नमस्कार है ।

सर्वेन्द्रियाणामाधारः सर्वभूतगुणाश्रयः ।
सर्वज्ञानमयानन्त मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ॥३२॥

आप सब इन्द्रियों के आधार हैं और समस्त भूतों तथा गुणों के आश्रय हैं आप सर्व ज्ञानमय एवं अनन्त हैं। हे मृत्युंजय ! आपको नमस्कार है।

त्वमात्मा सर्वभूताना गणानां त्वमधीश्वरः ।
सर्वानन्दमयाधार मृत्युंजय नमोऽस्तु ते ॥३३॥

आप समस्त भूतों की आत्मा हैं और आप गणों के अधीश्वर हैं। आप पूर्ण आनन्दमय एवं आनन्द के आधार हैं। हे मृत्युंजय आपको नमस्कार है।

त्वं यज्ञः सर्वयज्ञानां त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ।
शब्दब्रह्मत्वमोङ्कार मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ॥३४॥

आप समस्त यज्ञों के यज है और बोध लक्षण वाली बुद्धि हैं। आप शब्द ब्रह्मा और ओङ्कार हैं। हे मृत्युंजय ! आपको नमस्कार है।

श्रीसदाशिव उवाच—
एवं सङ्कीर्तयेद् यस्तु शुचितस्ङ्गतमानसः ।
भक्त्याश्रृणोति या ब्रह्मन्न स मृत्युवशो भवेत् ।३५॥

श्री सदाशिव ने कहा—इस प्रकार से जो भगवान् शिव में अपना मन लगाकर परम पवित्र होकर संकीर्तन किया करता है और जो भक्ति भाव से श्रवण करता है। हे ब्रह्मन् ! वह कभी भी मृत्यु के वश में नहीं होता है।

न च मृत्युभंय तस्य प्राप्तकालं च लंङ्घयेत् ।
अपमृत्युभयं तस्य प्रणश्यति न संशयः ॥३६॥

उस कीर्त्तन करने वाले की कभी भी मृत्यु का भय नहीं होता है और यदि मृत्यु का काल भी प्राप्त होता है तो वह भी लंघित हो जाया करता है। उसको अपमृत्यु का भय नष्ट हो जाया करता है—इसमें कुछ भी संशय नहीं है।

व्याधयो नोपपद्यन्ते नोपसर्गभयं भवेत् ।
प्रत्यासन्नतरे काले शतैकावर्तने कृते ॥३७॥

कीर्त्तन करने वाले को कभी व्याधियाँ उत्पन्न नहीं हुआ करती हैं और उपसर्ग भय नहीं होता है। काल के प्रत्यासन्नतर होने पर शतैकावर्त्तन करने पर उसकी मृत्यु नहीं होती है।

मृत्युर्न जायते तस्य रोगन्मुंञ्चति निश्चितम् ।
पंचम्यां वा दशम्यां वा पौर्णिमास्यामथाऽपि वा ॥३८॥
शतमावर्तते यस्तु शतवर्षं स जीवति ।
तेजस्वो बालसम्पन्नो लभते शिवमुक्तमम् ॥३९॥

वह रोग से निश्चित रूप से मुक्त हो जाया करता है। पंचमी में अथवा दशमी में अथवा पौर्णमासी में मनुष्य एक शतबार आवृति किया करता है तो वह पूरे सौ वर्ष तक जीवित रहा करता है। वह तेजस्वी, बल से सम्पन्न होकर उत्तमदेव शिव को प्राप्त कर लिया करता है।

त्रिविधं नाशयेत पापं मनोवाक् कार्यसम्भवम् ।
अभिचाराणि कर्माणि कर्म्माण्याथर्वणानि च ।
क्षीयन्ते नात्र सन्देहो दुःस्वप्नश्च विनश्यति ॥४०॥

मन – वाणी और शरीर में उत्पन्न होने वाले विविध प्रकार के पापों को नष्ट कर देता है : उसके प्रति किये गये अभिचार कर्म और आथर्वण क्षीण हो जाया करते हैं—इसमें लेश मात्र भी सन्देह नहीं है। उसके दुःस्वप्न भी नष्ट हो जाते हैं।

इदं रहस्यं परंम देवदेवस्य शूलिनः ।
दुःस्वप्ननाशनं पुण्यं सर्वविघ्नविनाशनम् ॥

देवों के भी देव शूली का यह परम रहस्य है। यह परम पुण्य स्वरूप—दुःस्वप्नों के विनाश करने वाला और सभी तरह के विघ्नों को नष्ट करने वाला है।

॥ समाप्तम् ॥
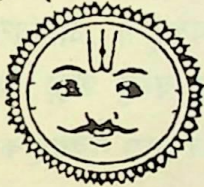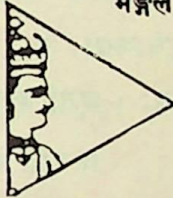
नवग्रह मंडल

पूर्वे
इन्द्र
ईशान्यां
आग्नेयां
बुध : ४
शुक्र : ६
चन्द्र : २
बृहस्पति : ५
सूर्य : १
मङ्गल : ३
उत्तरे
कुबेर
दक्षिणे
यम
केतू : ९
शनि : ७
राहु : ८
वायव्यां
पश्चिमे
वरुण
नैऋत्य

नवग्रह कवच

ॐ शिरो मे पातु मार्त्तण्डः कपालं रोहिणीपतिः । मुखमङ्गारकः पातु कण्ठं च शशिनन्दनः ।। बुद्धिं जीवः सदा पातु हृदयं भृगुनन्दनः । जठरं च शनिः पातु जिह्वां मे दितिनन्दनः ।। पादौ केतुः सदा पातु वाराः सर्वाङ्गमेव च । तिथयोऽष्टौ दिशः पान्तु नक्षत्राणि वपुः सदा ॥ अंसौ राशिः सदा पातु योगश्च स्थैर्यमेव च । सुचिरायुः सुखी पुत्री युद्धे च विजयी भवेत ॥ रोगात्प्रमुच्यते रोगी बन्धो मुच्येत बन्धनात् ॥ श्रियं च लभते नित्यं रिष्टिस्तस्य न जायते यः करे धारयेन्नित्यं तस्य रिष्टिर्न जायते ॥ पठनात् कवचस्यास्य सर्वपापात् प्रमुच्यते । मृतवत्सा च या नारी काकवन्ध्या च या भवेत् ॥ जीववत्सा पुत्रवती भवत्येव न संशयः । एतां रक्षां पठेद् यस्तु अङ्गं स्पृष्ट्वापि वा पठेत् ।

।। इति श्रीयामल तन्त्रे नवग्रह कवचं सम्पूर्णम् ।।